समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अक्टूबर २००४ • वर्ष ५४ • अंक १० • एक प्रति १० रुपए • वार्षिक १०० रुपए

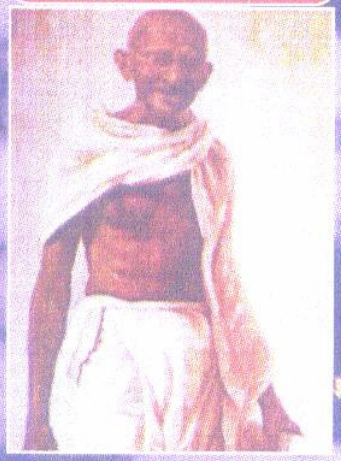

गांधी जयन्ती

इन शताब्दियों के अप्रतिम अहिंसा हथियार धारक भारत व अनेकों देशों की स्वतंत्रता के रूपक

गणेश चतुर्थी

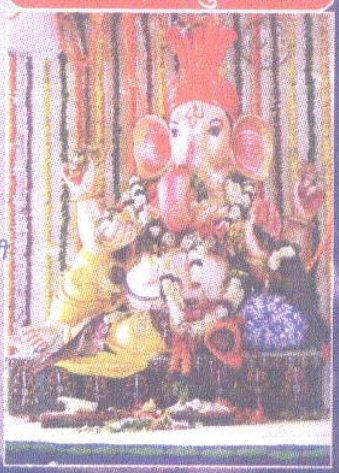

सर्वगुण प्रदाता सर्वशक्ति प्रवाहकारी

नवरात्री आराध्या

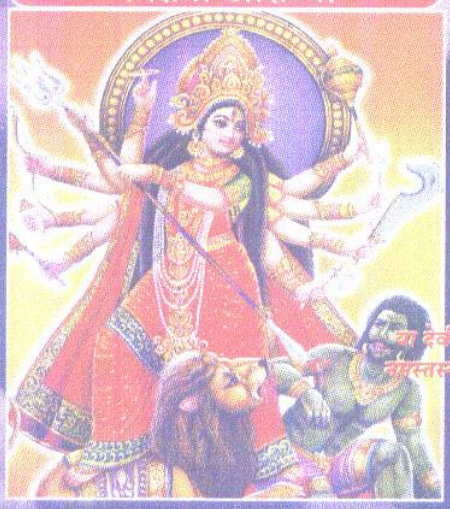

या देवी सर्वभूतेषु, शक्तिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

परमगति परमकान्ता रमणीय रूप

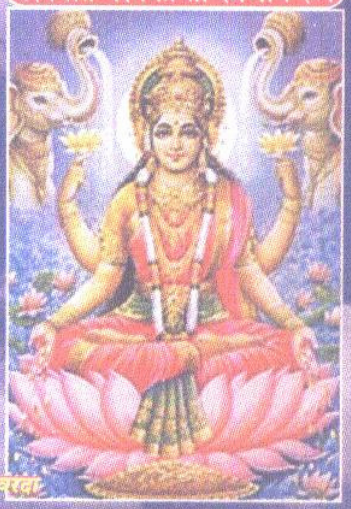

नव धान्य नव सम्पदा नव श्रेय वरदा

JALAN TRADING CO.

4, Synagogue street, 2nd floor
Kolkata : 700001
Ph. No. 2242-2585, 2242-4654 (Telefax)
Email : rohitashwaj@hotmail.com

Branch

405, Annapurna Plaza, S.S. Road
Fancy Bazar, Guwahati- 781001
Ph. No. 2514754, 2520543

Agents

AMRIT BANASPATI CO. LTD.
Chandigarh road, Rajpura, Punjab

Manufacturers :

GAGAN VANASPATI
GOURAV REFINED OIL
MERRIGOLD TABLE MARGARINE
BANSARI FILTER MUSTARD OIL
AMRIT BAKERYSHORTENING ETC.

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
बधाई व अभिनन्दन	४
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	५
सामूहिक जीवन / *नन्दकिशोर जालान*	६
दीपावली की शुभकामनाएं / *भानीराम सुरेका*	७
दीपावली : ज्योति पर्व / *तारादत्त निर्विरोध*	८
सम्मेलन संस्थापक के विचार कोष से	९
असम के मुख्यमंत्री को पत्र	१०
अन्तरदीप / *कविता*	१०
सन्नाटे के साए में आस्थाएं / *बंसीलाल बाहेती*	११
दिवाली - आत्मदीप जलाए / रामनिवास लाखोटिया	१३
विकसित भारत का सपना / भारत के राष्ट्रपति	१४
बापू के विश्वासों में धर्म / चारूग्रही	१५
कविताएं - कहां गई हिन्दी / हाथ मिलाइये	१९
नव नवेला राजस्थान / *मनोहर लाल गोयनका*	१७
कविता / फासला	१८
सिमटती संवेदनशीलता / *सत्यनारायण सींघानिया*	१९
इंटरनेट पर मोहब्बत से तलाक / *श्याम जांगीड़*	२०

युग पथ चरण

कार्यकारिणी समिति
के निर्णय पूर्वोत्तर,
बिहार
बिहार शिक्षा समिति-
उत्तर प्रदेश युवा मंच
महिला सम्मेलन
एवं अन्य अनेक अन्य
संस्थान आदि आदि

२१-३४

समाज विकास

अक्टूबर, २००४
वर्ष ५४ ● अंक १०
एक प्रति- १० रु.
वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

हमारी बधाई व अभिनंदन

पटना : आगामी सत्र के नये अध्यक्ष निर्वाचित

दिनांक ०३.१०.२००४ को सम्पन्न बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक समिति की बैठक में आगामी सत्र २००५-०७ के लिए श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (पटना) निर्विरोध प्रादेशिक अध्यक्ष चुने गए। श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला का जन्म ४ जनवरी १९३७ को पटना सिटी में हुआ। स्नातक करने के बाद आप 'एम.बी.ए.' की शिक्षा के लिए अमेरिका गए। वहां से लौटने पर आप कलकत्ता में बिड़ला कम्पनी में काम करने लगे। एक दशक के उपरान्त आप पटना लौटकर 'पाटलीपुत्र कागज उद्योग' प्रारम्भ किए। विभिन्न सार्वजनिक सेवाओं में अग्रणी रहते हुए १९८०-८२ तक बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री, १९८३-८६ तक उपाध्यक्ष तथा १९९१-२००० तक स्थायी कोष के प्रबन्ध न्यासी पद को सुशोभित किए। आपने ६ वर्ष तक बिहार प्रादेशिक शिक्षा समिति के अध्यक्ष पद का भी कार्यभार संभाला। तत्पश्चात बिहार इण्डस्ट्रीज एशोसिएशन के विभिन्न पदों पर सफलतापूर्वक दायित्व निभाते हुए १९९७ में इसके अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए और आप विगत ५ वर्षों से स्टेट बैंक आफ इंडिया के निदेशक हैं तथा बिहार एवं झारखण्ड यूनिट के अध्यक्ष। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सत्र २००५-०७ के लिए अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर हार्दिक बधाई।

कानपुर : श्री सोमप्रकाश गोयनका अध्यक्ष पुनर्निवाचित

श्री सोम प्रकाश गोयनका
अध्यक्ष, उ. प्र. मारवाड़ी सम्मेलन

१८ अप्रैल २००४ को हुई प्रादेशिक साधारण सभा में श्री सोमप्रकाश गोयनका को उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्ष पुनर्निर्वाचित करते हुए उन्हें सर्वसम्मति से प्रादेशिक इकाई के पदाधिकारीगण और कार्यसमिति मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। दिनांक ९ मई २००४ को हुई कार्यसमिति की बैठक में श्री गोपाल सूतवाला को प्रादेशिक मंत्री मनोनीत किए जाने की घोषणा की गई।

बैठक में भावी कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श के उपरान्त सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि समाज के निर्धन, असहाय और मेधावी छात्रों को चिकित्सा और शिक्षा संबंधी सहायतार्थ शिविरों का आयोजन कर उपयुक्त पात्रों का चयन किया जाए एवं उन्हें आवश्यकीय सहायता दी जाए।

श्री गोपाल सूतवाल
मंत्री, उ. प्र. मारवाड़ी सम्मेलन

महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव में पुनः विजयी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री राज के. पुरोहित

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश बंग

दीप नहीं, दीप का प्रकाश चाहिए

✍ मोहन लाल तुलस्यान

दीप नहीं, दीप का प्रकाश मुझे चाहिए,
आंज मैं सकूं जिसे हरेक आंख में अभय,
बांट मैं सकूं जिसे समस्त विश्व में सदय,
बांध क्षुद्र धूल कर सके जिसे न क्रय, न क्षय।

उत्सवों के दिन है। हम उत्सवधर्मी लोग उत्सवों में लीन हैं। अपनी क्षमतानुसार उत्सव का अधिकाधिक आनन्द प्राप्त करना ही हमारा जीवन ध्येय है।

सदियों से हम उत्सव मनाते आ रहे हैं, आगे भी मनाते रहेंगे। हमारे पूर्वजों, मनीषियों ने उत्सवों की अवधारणा इसलिए ही तो की थी कि जीवन के बोझिल क्षणों को भूलकर विषाद को भेंटकर, शत्रुता, वैमनस्य को विस्मृत कर हम खुशी से सरोबर हो जाएं।

हम दैनन्दिन जीवन में अनेकानेक समस्याओं से घिरे रहते हैं। घर-परिवार-समाज- रोजगार की चिन्ता हमें सुकून की नींद सोने नहीं देती। ऐसे में हमें तलाश होती है ऐसे पल की जब हम सभी कुछ भूलकर आनन्दमग्न हो सकें।

उत्सव हमें आनन्द का अवसर देता है लेकिन इसके साथ यह संदेश भी देता है कि हम सिर्फ अपने आनन्द तक ही सिमट कर न रह जाएं।

यही हमारी शानदार परंपरा रही है कि हम 'अपने सुख को विस्तृत कर लो, जग को सुखी बनाओं' की नीति में विश्वास करते हैं। हमारे पूर्वजों ने व्यापक दृष्टिकोण का परिचय देते हुए 'बसुधैव कुटुम्बकम' का संदेश दिया था। सिर्फ संदेश ही नहीं दिया बल्कि उसका पालन भी किया। तभी तो हमारी परंपराओं, अवधारणाओं को विश्व समाज में प्रतिष्ठा मिली। सत्य, अहिंसा, प्रेम, बन्धुत्व की भावना के सबसे पहले प्रचारक हम ही तो थे।

हम मारवाड़ी सदा से शांति, अहिंसा, सत्य, प्रेम, बन्धुत्व के पक्षधर रहे हैं। व्यापार-वाणिज्य से जुड़े होने के कारण हम ऐसी परिस्थिति चाहते हैं जिसमें बिना विघ्न-बाधा के हम जी सकें।

मगर आज हमारे चारों ओर जो स्थिति है वह जटिल है। हमारे पुराने आदर्श समाप्त होते जा रहे हैं। बसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष करने वाले हम अधकचरा संस्कृति के पूजक होते जा रहे हैं।

इस अधकचरा संस्कृति ने हमें पतनोन्मुख बना दिया है। हम ठोस यथार्थ को भूलकर दिखावे की राह पर चल पड़े हैं। सामूहिक विकास की अवधारणा व्यक्ति केन्द्रित विकास तक सिमट गई है। आत्मीयता, संवेदना की भावना मिट रही है। अब हमें अपने सगों को दु:ख भी द्रवित नहीं करता।

सामाजिक क्षेत्र में भी घोर निराशा का माहौल है। समाजसेवा स्वयंसेवा में परिवर्तित हो गई है। दूरदर्शी, क्रांतिकारी, नि:स्वार्थ सामाजिक नेतृत्व का सर्वथा अभाव है।

सामाजिक नेतृत्व का अंकुश न होने के कारण लोग बेलगाम हो गये हैं। सब अपनी मर्जी से चलना चाहते हैं।

यह स्थिति किसी भी तरह संतोषप्रद नहीं है। हमारा अस्तित्व हमारी मान्यताओं, परंपराओं, आदर्शों और सिद्धांतों के अनुपालन पर टिका होता है। एकाकी जीवन निरस होता है। निरसता घुटन और कुंठा को जन्म देता है। इस बार उत्सवों के दिन में हम यह संकल्प लें कि हम अपनी परंपराओं की जड़ तलाश करेंगे एवं ऐसा सामाजिक संरचना बनाएंगे जो एकता को मजबूत करने के साथ-साथ हमें जीवन का वास्तविक आनंद दें।

हम यह कोशिश करें कि सिर्फ दीप नहीं, दीप का प्रकाश बनकर चारों ओर पसरे अंधेरे को खत्म करें।

मेरी भावना स्पष्ट है-

देवता नहीं, मनुष्य बस मनुष्य बने रहे
अर्चना न, वन्दना न, द्वेष मुक्त मन रहे
स्वर्ग नहीं, भूमि-भूमि के लिए शरण रहे
अमृत नहीं, मर्त्य का विकास मुझे चाहिए
दीप नहीं, दीप का प्रकाश मुझे चाहिए।

सामुहिक जीवन - एक अटूट आवश्यकता

✍ नन्दकिशोर जालान

'परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथः ॥'

परस्परिक सद्भाव और पारस्परिक सहयोग वह मूल मंत्र है जिससे हर प्रकार की विभूति प्राप्त हो सकती है। सामाजिक समन्वय की दृष्टि, सामाजिक समूह की क्रिया-प्रक्रिया यदि किसी विशेष लक्ष्य की ओर केन्द्रित होती है, तो वह लक्ष्य पूर्ति सहज हो जाती है, अन्यथा वह दूभर ही रहती है।

यदि कोई कहे कि व्यक्ति का जीवन समाज से अलग थलग है तो वह उक्ति अधिकतर अर्थहीन होगी। समाज से अलग जीवन कोई जीवन हो ही नहीं सकता। अपने जन्म दिन से अपने मरणदिन तक व्यक्ति के जीवन के हर कण में समाजकी गतिविधि, समाज का दर्शन समाया रहता है। फर्क केवल एक हो सकता है- सामाजिक नियम कायदों के परिवर्तन और व्यक्ति, समाज, देश की प्रगति के कारण समाज के दर्शन में बदलाव आता है, उसका अलग-अलग व्यक्तियों के जीवन में विभिन्न अंशो में प्रभाव।

इस विभिन्न अंशों में प्रभाव का अन्तर मिटाने का अनिवार्य व अचूक उपाय है सामूहिक जीवन और समूह में विचार-विमर्श का पथ। यहीं पारस्परिक सद्भाव और पारस्परिक सहयोग का मूल मंत्र कारगर होने लगता है। जब अनीति और उत्पीड़न समाज में अपनी धुरी जमा लेते हैं, तब ध्रुव सत्य की तरह ही पहले एक ओर पीछे अनेक चिन्तक उन दुरुपयोगी व अमानवीय प्रथाओं के विरोधियों के रूप में उभर कर सामने आते हैं। उनके चिन्तन का धरातल गोष्ठियां की चर्चा का विषय बन जाता है। उस चिन्तन के पीछे जो सत्यता व सामाजिक न्याय की मांग रहती है, वह एक दूसरे के सद्भाव व सहयोग द्वारा अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाता रहता है। फिर वह चिन्तन विभिन्न जगहों में सामाजिक समूहों के सामने उपस्थित किया जाने लगा है। विरोध और समर्थन की आंधी के बीच से होता हुआ वह चिन्तन आगे बढ़ता रहता है और धीरे-धीरे समाज के मानस पर छा जाता है याने समाज उसे स्वीकारता है। दूसरे शब्दों में समाज की सामूहिक साधना का फल एक दूसरे के पारस्परिक सद्भाव व पारस्परिक सहयोग की सीढ़ियों के जरिये प्रस्फुटित होता है और सामाजिक परिवर्तन के चक्र की रफ्तार तेज करता है। अलग-अलग व्यक्तियों में पृथक-पृथक गुण होते हैं। अपना गुण यदि व्यक्ति अपने तक ही सीमित रखे, तो वह सामाजिक अन्याय का भागी होता है। अपने गुणों को सामाजिक धरातल देना, समुदाय के लिए व्यापक व सुलभ करना, यह अपने कर्त्तव्य की पूर्ति की ओर बढ़ते रहना है। जो अपने गुण को व्यापकता नहीं देना चाहत, उनके पीछे दो ही तथ्य हो सकते हैं- (१) वास्तव में वर्णित गुण से विहीन होना (२) उसके आवरण को अपने लिए भोग्य बना लेना। झूठ सच के आवरण में छिपा कर अपने तथाकथित गुण को व्यापकता नहीं देनेवाले स्वयं मन में जानते हैं कि वह गुण ताकत विहीन है। यदि वह गुण है, तो उसका प्रचार-प्रसार करने में, उसे समाज के समूह में व्याप्त करने में कहीं कोई बाधा नहीं होती और वह गुण समाज देश व काल पर अपनी छाप लगाता है और चिरस्मरणीय बन जाता है।

हमारे देश में हुए उन व्यक्तियों की बात अलग है, जो निजी सत और पौरुष में अद्वितीय हुए हैं। उन पर हमें गर्व हो सकता है, हम उनके सामने नतमस्तक हैं। लेकिन उनमें से जिन्होंने अपने-अपने सत और पौरुष के गुण को सर्व व्यापकता न दी, उनका वह गुण समाज व देश के धरातल पर न उतर सका। फल वही हुआ जो ऐसी स्थिति में होता है- वह तथाकथित सत् और पौरुष उनके साथ चला गया और समाज व देश में उनके बराबर सत् और पौरुष वाले न बने। समाज व देश को बदलते, समाज को शक्ति प्रदान करने, समाज के बौद्धिक, आर्थिक, सामुदायिक विकास के पथ को सुगम करने वाले वे ही रहे हैं, जिन्होंने अपने चिन्तन को, अपने गुण को व्यापकता दी है और अपने चिन्तन व गुण को समूहों के बीच फेंक कर सारे समूह को उनसे लाभान्वित होने का आह्वान किया है। जिन व्यक्तियों ने अपने सद्गुण जितनी मात्रा में समाज को समर्पित किये हैं, उन्होंने अपना जीवन उतनी ही मात्रा में सही अर्थों में जिया है।

महात्मा गांधी केवल इस शती के ही नहीं, पिछली अनेक शतियों में उस विलक्षण गुण से सम्पन्न व्यक्ति हुए हैं, जिस गुण को 'अहिंसा' की संज्ञा दी जाती है। मेरा दृढ़ मत है भविष्य का भारतीय इतिहास उन्हें इस देश में हुए अवतारों की कड़ी में जोड़ेगा और गांधी अवतार का अपना अलग प्राक्थन बनेगा। लेकिन गांधी के इस विलक्षण गुण की कीमत उनके घर की चहार दीवारियों में घिरे रहने के कारण नहीं बनी, बल्कि उसे व्यक्तियों के, समाज के, देश के, जन जन के जीवन में पिरो देने के कारण बनी। ऐसी कोई सभा,

ऐसा कोई समाज, ऐसा कोई व्यक्ति चाहे वह विदेशी ही क्यों न हो, जो उनके सम्पर्क में आया, उनके उन विलक्षण गुणों के चिन्तन को अपने साथ लाया और साथ-साथ सीख कर आया- पारस्परिक सद्भावना, पारस्परिक सहयोग का मूल मंत्र भी। उनके गुण की, उनके चिन्तन की प्रक्रिया इतनी तेज रफ्तार से सामूहिक वह सार्वजनिक होती गई कि केवल गांधी ही नहीं, लाखों व्यक्ति अपनी खुली छातियों पर गोलियों की वर्षात सहने को तैयार हो गये। देश में फैले सैकड़ों हजारों सम्प्रदाय सैकड़ों वर्षों से जकड़े सामाजिक पाखण्डों, धोखाधड़ी की जंजीरों से भी अपने को मुक्त करने में समर्थ हो गये। सच पूछा जाए तो गांधी के सामूहिक चिन्तन की ज्वालाएं केवल देश की सीमाओं में ही बंध कर न रही, बल्कि चारों ओर उनका चिन्तन ज्वालाओं की तरह फैलकर विदेशियों द्वारा पददलित अनेक देशों और समाजों को नई आशाओं, नई आकांक्षाओं, नई स्वतंत्रता का जनक बना दिया।

राणा प्रताप केवल हल्दी घाटी की लड़ाई के लिए नहीं, जिसके बाद उन्होंने बिस्तर पर सोना तक छोड़ दिया था, भामाशाह केवल अपने वैभव के लिए नहीं, शिवाजी केवल कुछ दुर्गों के अधिपति के रूप में नहीं, बल्कि अपना सब कुछ त्यागकर स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्वलित रखने के लिए स्मरणीय है। तिलक के ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार'' के नारे को कौन-सा युग भूल सकता है। अन्य क्षेत्रों में ले तों एक ही उदाहरण बहुत है- आयुर्वेदाचार्य चरक अपनी ईजाद की हुई दवाइयों को अपने तक सीमित रखकर मर जाने के लिए नहीं, बल्कि आयु के उस वेद के अतुल भंडार को जन-सुलभ करने के लिए स्मरणीय है। उदाहरणों का अंत नहीं, प्रश्न है हमारी एकांगी वृत्ति के अन्त का।

आइये हम सब मिलकर अपने-अपने गुणों को पारस्परिक सद्भावना व पारस्परिक सहयोग के थल में परोस कर सामूहिक व सामाजिक जीवन को सम्मान समर्पित करें।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

■ भानीराम सुरेका
राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

ज्योति पर्व दीपावली प्रतीक है अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, असत्य पर सत्य तथा अधर्म पर धर्म की विजय का। यह त्यौहार सारे संसार में सदियों से मनाया जाता है। देश के सभी भाइयों पर लक्ष्मी की कृपा बनी रहे। दीपावली बड़ी आस्था के साथ मनावें, पवित्रता से मनावें। सोमरस व जुआ खेलने से अपनों को रोकें। भ्रातृत्व भावना व ईमानदारी के साथ सभी की सुरक्षा के लिए लक्ष्मीजी की अर्चना आराधना करें। आत्मीयता की उज्वल कामना के साथ सभी को मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से मेरी शुभकामनाएं। मारवाड़ी लोगों के मितव्ययी होने के कारण लक्ष्मी की उन पर असीम कृपा है। धन को सुरक्षित रखने के गुण, स्वभाव से विनम्र एवं मृदुभाषिता के गुण अपने में ही है इसलिए ही परोपकार- लोकोपकार के कार्यों में हमलोग सदैव अग्रणी है।

मारवाड़ी समाज एक चतुर समाज है, उनको किसी भी बात को समझने में देर नही लगती। उनके लिए इशारा ही काफी है। हजारों-लाखों लोगों से, श्रमिकों से, कर्मचारियों से कुशलतापूर्वक काम कराना भी उसकी क्षमता है। उसका दिमाग केलकुलेटर व कम्प्यूटर से भी तेज है, उलझन जो भी है समाधान ढूंढ़ लेते हैं। इनका दिमाग उलझा हुआ नहीं रहता। मारवाड़ी समाज के लोग अपने कार्य को पूरा करने के लिए दिन रात नहीं देखते। व्यापार-उद्यम के लिए दुर्गम स्थानों में मारवाड़ी लोग बसे हुए हैं। आसाम में वर्तमान समय में इतना झमेला चल रहा है, किन्तु फिर भी सभी मारवाड़ी भाई डटे हुए हैं। अपर आसाम में कई मारवाड़ी परिवारों को हर तरह से नुकसान हुआ है, वे वहां पर कठिनाइयों में है फिर भी उनमें साहस, संयम व धैर्य आदि गुणों की भी प्रचुरता मिलती है जो शारीरिक बल से संबंध रखते हैं। वे ईर्ष्या, घृणा, अहंकार आदि से कोसों दूर हैं और स्थानीय लोगों से उनकी भाषा में ही प्रेमभाव से बात करते हैं। यह समरसता की सोच सम्मेलन सभी अपने प्रांतों को देती रहती है और पश्चिम बंगाल में भी इसी भावना को लेकर बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार प्रदान करेगा जो कि इसी महीने में हर वर्ष की भांति कोलकाता में होने जा रहा है आदि। इतना होते हुए भी उनका कथित सेवा शुल्क देना बंद या कम कम देवें तो धमकी, चेतावनी, प्रताड़ना, हिंसा एवं अराजकता आदि का परिणाम मिलता है। आसाम से आतंकवाद के सफाये के लिए यह जरूरी है कि सरकार द्वारा कड़ी कार्रवाई की जाये, आसाम यह घाव कब तक झेलेगा। इस आतंकवाद को समाप्त करने के लिए भारत सरकार का स्पष्ट और प्रभावशाली कदम उठाने के लिए मारवाड़ी सम्मेलन केन्द्र सरकार से बातचीत करेगा। उत्तर पूर्वी प्रांतों में चल रहे आतंकवादी कार्यवाहियों के प्रति सरकार को शक्ति से पेश आना चाहिए। इसके लिए हमारा पूर्वोत्तर प्रांत सक्रिय है।

दीपावली के ऊपर आध्यात्मिक संदेश सबको देवें, 'प्रेम' और 'मैत्री' का संदेश देवें। आत्म ज्ञान के दीपक जलेंगे तभी 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की भावना से आनन्दित करेंगे। यह रोशनी का त्यौहार है इसका रूप न बदलने दीजिए। होटलों, क्लबों, फार्म हाउसों में दिवाली को रंगीन न करें, आधुनिकता में ढूंढ़कर ऑनलाइन दिवाली न मनायें।

दीप के प्रकाश की कोई जाति धर्म नहीं होता, अपने पराए का भेदभाव नहीं होता, दीपक सबके लिए समान रोशनी देता है इसी तरह हम सब समान है।

'दीप से दीप की ज्योत जलाते चलें।
रामा-श्यामा की रस्म निभाते चलें।' ●

दीवाली : लक्ष्मीपूजा का ज्योति पर्व

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध, जयपुर

असंख्य दीपों एवं उनकी पंक्तिबद्ध मालाओं से अग लग को ज्योतिर्मय करना और लक्ष्यहीन अंधेरे स्थान पर ज्योति कणों को स्थापित करना दीपावली का उद्देश्य है। जगजीवन की नई संचेतना और जागरण की प्रतीक दीपावली का सार्वजनिक अर्थ है- 'लक्ष्मी का पूजन'। इसकी अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि रही है जिसने इसे राष्ट्र के ज्योति पर्व का स्वरूप प्रदान किया है।

पुराणों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान को दूर दृष्टि से देखना ही दीपावली का विषय है। इतिहास में इसके संबंध में ऐसे अनेक आख्यान हैं जो इसके मनाए जाने की कथा से प्रकाश में आते हैं। देवताओं और दानवों के बीच सागर मंथन की कथा में भी चौदह रत्नों में लक्ष्मी का होना बताया गया है। वस्तुत: दीवाली जगमग-जगमग करने वाले दीपों का त्यौहार है जो जीवन की सुखानुभूतियों की सजीव अभिव्यक्ति है। लक्ष्मी को सुख, स्मृद्धि एवं गौरव प्रदायिनी माना गया है। वह हर वर्ष कार्तिक की अमावस्या को जन्म लेती है और सभी को विकास पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देती है।

दीपावली भारतीय संस्कृति का सर्वोपरि पर्व है। प्रचलित किवंदतियों, आख्यायिकाओं और जनश्रुतियों के कारण इसका संदर्भ किसी एक कथा से जुड़ कर नहीं रह गया है। पुराणों में सागर मंथन, राजा बलि की दानशीलता, महाकाली का भोले शिव में समावेश, श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर के अत्याचारों का अंत, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के बनवास से लौटने पर राज्याभिषेक का प्रसंग, श्री महावीर एवं स्वामी दयानन्द की निर्वाणतिथियों, स्वामी रामतीर्थ के जन्म और निर्वाण के अवसर को लेकर अनेक लोककथाएं दीपावली के साथ जोड़ी गई हैं। ये कथाएं किसी विचारक को एक निष्कर्ष तक नहीं पहुंचने देतीं।

वास्तविकता यह है कि दीवाली एक मांगलिक पर्व है जो हमारे देश में कन्याकुमारी से कश्मीर और बंगाल से गुजरात के विस्तीर्ण कर्मक्षेत्र में मनाया जाता है। सभी स्थानों पर दीपावली-पूजन का अर्थ समाजोत्थान एवं जन-जागृति, मन के भीतर और बाहर फैले तिमिर का क्षरण तथा नए दृष्टिकोण की स्थापना है।

भारतीय समाज में रूढ़ी हुई लक्ष्मी को मनाने, अपने व्यापार की वृद्धि करने एवं जीवन को सक्षम बनाने और घर-बाहर की सफाई, साज-सज्जा तथा नए कार्य के श्रीगणेश के लिए दीपावली के दिन को शुभ माना गया है। इस दिन महालक्ष्मी की उपासना का विधान किया गया है। जीवन की आकांक्षा और उसके लिए कार्यारम्भ करने की दूरदर्शिता ही दीपावली मनाए जाने का विशेष कारण है। इसके लिए समाज के हर तबके का व्यक्ति जागरूक एवं कार्यरत होने को लालायित रहता है।

लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी हैं जो खिले हुए कमल पर खड़ी हैं। इस कमल की हर पंखुड़ी लक्ष्मी के गौरव एवं उसकी प्रसन्नता का परिचायक है। दीपावली के दिन लक्ष्मीपूजा कर देशवासी अपने उज्जवल भविष्य के प्रति आस्थावान होते हैं। जनश्रुति तो यह भी है कि लक्ष्मीपूजा में जलाए गए दीपक भारतीय संस्कृति की पावनता और देवों तथा महापुरुषों की दानशीलता का संकेत देते हुए सर्वत्र प्रकाशकण बिखेरते हैं। दीपावली मूलत: श्रीराम के सद्गुणों और रावण की पराजय की कथा से लोकजीवन का असत्य से सत्य की ओर उन्मुख होने का चिरंतन संदेश देती है। इस पर्व पर हीडपूजन द्वारा जहां सांस्कृतिक महत्व दर्शाया जाता है, वहां भावात्मक एक्य की प्रेरणा भी दी जाती है। हीडपूजन राजस्थानी दीवाली का प्रमुख अंग है। यों, दीवाली के तहत धनतेरस, छोटी दीवाली, बड़ी दीवाली, अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, चित्रगुप्त पूजा और भैया दूज जैसे अनेक त्यौहार एक क्रम से जुड़े हैं। इस दिन सोने और चांदी के सिक्कों की पूजा की जाती है। देश में लक्ष्मीपूजन की विधियां सर्वत्र एक जैसी हैं। पूजा का आधार लक्ष्मी का आहवान है। इस प्रकार दीपावली हमें सत्यम-शिवम्- सुन्दरम अर्थात् सत्य, हर्षोल्लास, माधुरी और सौंदर्य की उत्प्रेरक भावनाओं की दिव्यता से जोड़ती है। हमारा देश हाल ही में भूख, गरीबी, बेकारी, कर्ज, भ्रष्टाचार और बेईमानी के अंधेरे से निकलकर नए परिवर्तन के जीवन में आया है। अभी भी भीतर बाहर अंधेरा व्याप्त है। हम तन के अंधेरे और रिक्त कोनों में उजाले की तलाश करें, सभी दीपोत्सव का मनाया जाना सार्थक होगा।

स्थिति यह है कि लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता और समाजवाद जैसे शब्द जिस दिन सत्य की अखंडित ज्योति बनेंगे, उस दिन हमारे देश में दीवाली अपने अतीत को सचित्र करेगी और देश हर क्षेत्र में विकसित कहलाएगा।

आओ, हम सबसे पहले मन का दीपक जलाकर जीवन में व्याप्त तिमिर को हरें।●

• • • • • • • • • • • • • • • •

पाठकों एवं लेखकों से निवेदन :

'समाज विकास' समाज की ज्वलन्त समस्याओं का एक विवेचक पत्र है।

लेखक-लेखिकाओं, कवि-कवयित्रियों आदि से निवेदन है कि वे अपने लेख, कहानियां, कविताएं, किस्से एवं सच्ची घटनाएं आदि हमें भेजें। देश और समाज की समस्याएं अधिकतर समानधर्मा होती हैं, तथापि उस परिप्रेक्ष्य में समाज का थोड़ा-सा अधिक विश्लेषण उचित होगा।

पत्र व्यवहार का पता :- सम्पादक, 'समाज विकास', १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७

सम्मेलन के प्रमुख संस्थापक की विचार गोष्ठी से जो आज भी शत प्रतिशत प्रभावी है

✍ ईश्वर दास जालान

मारवाड़ी समाज की स्थिति के संबंध में समाज विकास के पिछले अंकों में मैंने बहुत कुछ लिखा है और देश की वर्तमान अवस्था में हमारा क्या कर्त्तव्य और किस तरह हम अपनी स्थिति को सम्मानस्पद बना सकते हैं, इसका भी विश्लेषण किया है। अब प्रश्न इतना ही रह जाता है कि हम इस दिशा में कुछ करना चाहते हैं या नहीं? यदि हम यह समझते हों कि जैसे अबतक चलते आये हैं, उसी तरह चलते रहेंगे तो हमारी भूल होगी। समय बहुत तेजी के साथ बदल रहा है। जितना परिवर्तन पहले २५ वर्षों में होता था, उतना परिवर्तन अब चार-पांच वर्षों में ही हो जाता है। सम्मेलन अपने लक्ष्य की ओर तभी बढ़ सकता है, जबकि समाज यह समझे कि हमें केवल अपने ग्राम या नगर तक ही संतुष्ट नहीं रहना है- बल्कि समस्त देश के बन्धुओं के साथ मिलकर समाज के स्वरूप को बदलना है। अभी जो चिन्तनधारा समाज की है, वह एकांगी है। केवल धन कैसे अधिक से अधिक उपार्जन किया जाए, यही हमारा एकमात्र लक्ष्य बन गया है- चाहे अन्य दिशाओं में हम किसी भी दुर्गति को क्यों न पहुंच जाये। देश के राजनैतिक जीवन में समाज का आज कोई स्थान नहीं है। विभिन्न विधान सभाओं में, चाहे वे केन्द्रीय हो या प्रादेशिक- हमारे बहुत ही कम आदमी इस समय सदस्य हैं। जितने पहले थे, उतने भी अब नहीं रहे। विभिन्न राजनैतिक संगठनों में भी हमारा नगण्य स्थान है। डा. राममनोहर लोहिया, सेठ गोविन्ददास, बृजलाल बियाणी, श्रीकृष्ण दास जाजू, जमनालाल बजाज, ऐसे ही कुछ और अन्य विशिष्ट कार्यकर्त्ता अब इस संसार में नहीं रहे। सम्पन्न वर्ग के द्वारा जो भी कुछ आदमी विधानसभाओं में भेजे जाते थे, वे भी अब नहीं रहे और उनके लिए चुनाव में सफल होना भी दिनानुदिन कठिन होता जा रहा है। यही कारण है कि राजनैतिक दृष्टि से इस समाज को जो रक्षा मिलनी चाहिए और इसका जो स्थान होना चाहिए, वह हमें नहीं मिल पाता और जितना कुप्रचार इस समाज के विरुद्ध में हो रहा है, उससे हम अपने को बचा नहीं पा रहेहैं। धन कुबेर होते हुए भी इसकी स्थिति मातृ पितृ विहीन बालकों की सी हो रही है- इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। जो चाहता है, इस समाज पर एक दुलत्ती झाड़ देता है और हमें इसे चुपचाप सहन करना पड़ता है। क्या समाज इन सब चीजों को मूक होकर देखता रहेगा? या अपने को संगठित करके बलवान बनायेगा और भारतवर्ष के भावी जीवन में एक महत्वपूर्ण और सम्मानस्पद स्थान ग्रहण करेगा?

दान-धर्म करना, अस्पताल, स्कूल इत्यादि खोलना, बाढ़, सूखा इत्यादि दैवी विपत्तियों में सहायता देना बड़ी अच्छी बात है- मनुष्य को अवश्यमेव इसे करना ही चाहिए। हम सदा से इसे करते भी आ रहे है और अवश्यमेव इसके कारण हमारे प्रति सद्भावना भी रहती है। परंतु क्या यह यथेष्ट है? क्या यह हमारे स्वरूप को बदल सकता है? समाज में शिक्षा बहुत बढ़ी, परंतु खेद के साथ कहना पड़ता है कि शिक्षितों में भी वही एकमात्र अधिकाधिक धनी बनने की मनोवृत्ति काम कर रही है। उनमें भी बहुत ही कम है, जिन्हें देश और समाज के लिए उनका क्या कर्त्तव्य है- इसकी कोई चिन्ता हो।

जिस जमाने में हमलोगों ने शिक्षा प्राप्त की थी, उस समय शिक्षितों की संख्या इनी गिनी थी, किन्तु प्राय: वे सभी सार्वजनिक जीवन में भाग लेते थे। राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक सभी दिशाओं में काम करने वाले उपलब्ध थे। आज तो शिक्षितों की संख्या लाखों में हो गयी है परंतु उनमें से कितने आदमी है जिन्हें अपने सिवाय, समाज और देश से कोई मतलब है। हमलोगों के प्रारंभिक समय में जो शिक्षा नहीं भी पा सके थे, वे युवा वर्ग भी सार्वजनिक जीवन में भाग लेते थे। उन्हीं में से अब भी कुछ बचे हुए हैं, जो आज सार्वजनिक जीवन में भाग ले रहे हैं। उनके तिरोहित होने के बाद और भी सन्नाटा हो जाएगा। मनुष्य अपने लिए तो सदा करता ही आया है, उसकी विशेषता यह होती है कि वह दूसरों के लिए भी कुछ करे। स्वार्थ एक स्वाभाविक वस्तु है, इसे कोई इनकार नहीं कर सकता है। अरस्तू (एरिस्टाइल) ने कहा था कि- मैंन इज ए सेल्फिश एनीमल- अर्थात् मनुष्य एक स्वार्थी जीव है। परंतु साथ ही इतिहास ऐसे आदमियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने अपना जीवन ही दूसरों के लिए उत्सर्ग कर दिया है। १८५० से १९५० तक हर क्षेत्र में ऐसे महापुरुष उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपनी छाप समाज पर छोड़ी और उन्होंने भारतवर्ष में बहुत बड़ा काम किया। मालूम नहीं कि भगवान की फैक्टरी में पहले दर्जे का ईंटा बनना बंद हो गया है क्या? पिछले १०० वर्षों से धार्मिक क्षेत्र में राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, विनोबाजी एवं अरविन्द घोष इत्यादि दिग्गज हुए। राजनैतिक क्षेत्रों में दादा भाई नौराजी, लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, श्रीनिवास शास्त्री, चित्तरंजन दास, सुभाषचन्द्र बोस, शरतचन्द्र बोस, ऐनीबेसेण्ट इत्यादि कितने ही नेता हुए। हाईकोर्ट के जजो में : सर गुरुदास बनर्जी, आशुतोष मुखर्जी। वकीलों में रासबिहारी घोष, सर बी.सी. मित्तर, सर एन.एन. सरकार, जैक्शन। कवियों में रवीन्द्र

नाथ टैगोर। व्यापारिक क्षेत्र तो उस समय भारतवासियों के लिए खुला हुआ था ही नहीं, तब भी टाटा आदि अन्य लोग हुए। प्राणों की आहुति देने वालों की संख्या तो अनगिनत हुई। अगर सबके नाम गिनाये जाये तो सैकड़ों की संख्यां में ऐसे लोगों के नाम लिये जा सकते हैं, जिनकी गिनती महापुरुषों में हो सकती है, किन्तु आज तो जो उठ जाते हैं, उनकी जगह लेने वाले नहीं मिलते।

सम्मेलन अपने जीवनकाल में सदैव यह चेष्टा करता रहा है कि समस्त मारवाड़ी समाज जो भारतवर्ष में फैला हुआ है, बिना किसी जाति गत, भेदभाव के एक संगठन द्वारा अपनी कुरीतियों को हटाकर बलिष्ठ बनावे और देश में अपना उचित स्थान ग्रहण करें। कार्य इतना बड़ा है और महत्वपूर्ण है कि जब तक समाज यह नहीं समझे कि हमें कुछ करना है तब तक न तो इसे आवश्यक सहयोग मिल सकता है और न उतने कार्यकर्त्ता ही उपलब्ध हो सकते हैं। जितनी इसकी शक्ति रही है और जितना सहयोग इसे समाज से प्राप्त हुआ है एवं जितनी कठिनाईयों का इसे सामना करना पड़ा है- उसे देखते हुए अब तक जो कुछ सम्मेलन कर सका है- वह थोड़ा नहीं है। परंतु जो कुछ हमें करना है और जिस लक्ष्य को प्राप्त करना है, उससे हम अभी बहुत दूर है। यह तभी हो सकता है कि जबकि समाज अपने चिन्तनधारा को बदले, जागरूक हो और उत्कृष्ट अभिलाषा उसके हृदय में जागृत हो कि हम भारतवर्ष में एक सम्मानपूर्ण स्थान ग्रहण करें और अपनी आत्मरक्षा के साथ-साथ देश को आगे बढ़ावें। भविष्य में आर्थिक विषयों की ही प्रधानता रहने वाली है और मारवाड़ी समाज की संख्या करोड़ों में है। केवल ८० हजार पारसी भारतवर्ष में हैं, परंतु हर क्षेत्र में उन्होंने जो स्थान प्राप्त किया है, उसमें जो उनकी प्रगति हुई है, उसको देखते हुए हमें कोई संतोष अपने समाज के संबंध में नहीं होता। हम अपनी शक्ति को हनुमानजी की तरह भूले हुए हैं। हम अपने को मारवाड़ी शब्द से सम्बोधित करते हुए भी हीनता बोध करते हैं जिसका कोई यथेष्ट कारण नहीं है- यद्यपि व्यापारिक और सामाजिक क्षेत्रों में कुछ कार्य ऐसे अवश्य हो रहे हैं, जो हमें दूसरों की दृष्टि में गिराते हैं।

समाज जिन प्रान्तों में बसा हुआ है, वहीं उसे जीना मरना है। अपने मूल प्रान्तों में उनके लिए वापस जाने की भी तो संभावना नहीं है। वह जिस प्रदेश में बसता है, वहीं के लोगों के साथ उसे घुल मिल जाना है। प्रांतीय भावनाएं दिनानुदिन बढ़ती जा रही है। असम और पश्चिम बंगाल में बहुत बार दंगे फसाद भी हो जाते हैं। अभी हाल में इम्फाल में जो दुर्घटनाएं हुई वह भी लोगों को मालूम है। इसके पहले इन प्रदेशों में जितने कांड हुए वे भी छिपे नहीं, फिर भी मैं देखता हूं कि समाज के बन्धु इन घटनाओं को फौरन भूल जाते हैं।

अप्रिय बातें बहुत सी है जिन्हें हम कहना नहीं चाहते, परंतु इतना अवश्य कहना होगा कि यदि समाज अब भी अपने को समस्त मारवाड़ी समाज की एकता के आधार पर (जातिगत आधार पर नहीं) संगठित नहीं कर सकेगा तो भविष्य में उसे कठिन परिस्थितियों का सामना करना होगा।

+++ ○○ +++

असम के मुख्यमंत्री के आक्षेप का कड़ा विरोध

पिछले महीनों असम के कई हिस्सों में भयंकर बाढ़ के सम्बन्ध में असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई ने यह आक्षेप किया बताया- 'फैन्सी बाजार के बड़े व्यापारी बाढ़ पीड़ित लोगों की मदद के लिए आगे नहीं आयें।'

उपर्युक्त वक्तव्य पर पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल व महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल ने कड़ा विरोध करते हुए मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई को तारीख ८ सितम्बर को पत्र दिया था और बताया था कि असम के विभिन्न भागों में मारवाड़ी समाज की विभिन्न संस्थाओं ने तन-मन-धन से राहत कार्यों में सहयोग दिया एवं वे राहत सामग्री लेकर ऐसे-ऐसे दुर्गम स्थानों में पहुंचे जहां प्रशासन भी जाने में हिचकिचा रहा था। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने इस बात पर भी जोर दिया कि समाज असम के सर्वांगीण विकास एवं गतिविधियों में सर्वाधिक योगदान दे रहा है, जिसकी स्थानीय लोगों ने भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इन्होंने मुख्यमंत्री से यह भी अनुरोध किया कि मुख्यमंत्री एक पिता और अभिभावक के रूप में होते हैं और उन्हें किसी प्रकार के ऊंच-नीच, जाति, वर्ग और धर्म सम्प्रदाय से ऊपर उठकर आदर्श और नैतिकता का उज्वल उदाहरण देते रहना चाहिए।

अन्तर दीप

माटी के दीपक बहुत जलाये, अब अंतर के दीप जलाओ
दीपावली मनाने वालों, मन मंदिर की ज्योति जगाओ
युग युग से तुम जला रहे, हर साल करोड़ों झिलमिल बाती
चमक दमक कर कुछ घंटों में, तेल जला कर वह बुझ जाती
ऐसी क्षणिक रोशनी से क्या, अंधकार तुम मिटा सकोगे
दीप जलाकर जीवन का तम क्या धरती से हटा सकोगे
अगर चाहते पूर्ण ज्योति तो, मन का मैल मिटाना होगा
इस धरती के हर दीपक को, तुमको सूर्य बनाना होगा
शोषण, स्वार्थ, कपट की, सबसे पहले चिता सजानी होगी
ऊंच नीच के भेदभाव की, दीवारें तुड़वानी होगी
भूखे नंगे गरीब जनों को बढ़कर गले लगाना होगा
जन-मन-गण जिसमें हर्षाये ऐसी नीड़ बनाना होगा
इसे दिवाली कौन कहेगा, महल हंसे और कुटिया रोए
खाये दूध मलाई कोई, कोई भूखा प्यासा सोये
सच्ची दीवाली तो राधे, उस दिन ही समझी जायेगी
आहें, चीख, गरीबी जिस दिन भारत भूं से उठ जायेगी।

■ *राधेश्याम शर्मा 'राधे'*
कोलकाता

सन्नाटे के साए में दम तोड़ती सामाजिक आस्थाएं

✍ श्री बंसीलाल बाहेती, कलकत्ता

तब देश परतंत्र था-सैकड़ों वर्षों की गुलामी ने हमारे विवेक सम्मान और स्वाभिमान को अपाहिज बना दिया था। क्षेत्रीय विषमताओं भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों और अनगिनित तबकों में बंटे इस देश की सामाजिक व्यवस्था भी पूर्ण रूप से बिखरी हुई थी। उसी दौर के राजनैतिक चेतना के साथ साथ सामाजिक जन जागरण का दौर भी आरंभ हुआ। राजस्थान में स्थिति और भी असहज रही। सामन्तशाही के उस दौर में आम व्यक्ति बेहद प्रताड़ित और असुरक्षित था- प्रकृति भी सदैव वहां प्रतिकूल रही- रजवाड़ों के आपसी झगड़ों ने भी वहां के जन-जीवन को त्रस्त कर रखा था। जीने के न्यूनतम साधनों के अभाव ने वहां के वाशिन्दों को अन्यत्र जाकर जीविका उपार्जन के लिए विवश कर दिया।

इस प्रकार राजस्थान से बाहर जाने का हौसला पहले पहले वहां के महाजन, साहूकार एवं बनिए लोगों ने किया। वे छोटे-छोटे समूह में वहां से निकले। तब आवागमन के साधनों का बेहद अभाव था। यात्रा बहुत कष्टसाध्य एवं खतरों से भूरपूर थी। लोग सुदूर आसाम, मालवा, मुलतान, बंगाल, महाराष्ट्र , नेपाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मद्रास आदि विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचे। विभिन्न क्षेत्रों में उनकी समान रूप से पहचान हुई और लोग उन्हें मारवाड़ी के रूप में जानने तथा पहचानने लगे।

मारवाड़ी समाज एक मेहनतकश एवं ईमानदार एवं प्रतिभाशील समाज के रूप में प्रतिष्ठित होता गया। व्यवसायिक सूझबूझ एवं विभिन्न समाजों में अपनी पहचान बनाने में जैसे जैसे मारवाड़ी बंधु सफल होते गए उनके प्रति शासन व प्रशासन दोनों का विश्वास बढ़ता गया।

मारवाड़ी समाज ने निरन्तर अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने का भरपूर प्रयास जारी रखा। वे जहां जहां गए वहां के समाज के साथ समरस होते गए। वहां उपार्जित धन का उन्होंने वहीं के लोगों के हित में विनिवेश करना शुरू किया। हर जगह स्कूल, मंदिर, धर्मशालाएं, औषधालाएं, कुएं, बावड़ी आदि का निर्माण करने में मारवाड़ी समाज ने अहम् भूमिका निभाई। ऐसे सारे कार्य सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय की भावना से किए जाते थे। इस प्रकार सामाजिक विकास की एक अहम् भूमिका में मारवाड़ी समाज का विशिष्ट योगदान रहा।

१९वीं सदी के अंतिम दौर में इस देश में जब राजनैतिक जन-जागरण का नया दौर आरंभ हुआ और वर्तमान कांग्रेस संगठन का निर्माण हुआ तो मारवाड़ी समाज ने पूरी निष्ठा से इसमें योगदान दिया एवं सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। उन्हीं दिनों अ. भारतीय माहेश्वरी महासभा का गठन हुआ और सारे देश में एक सशक्त सामाजिक आंदोलन व चेतना का आधार बनाने का साहसिक प्रयास हुआ। जैन समाज- ब्राह्मण समाज एवं अन्य जातीय संगठनों का विकास हुआ। इस प्रकार मारवाड़ी समाज छोटे-छोटे तबको में बंटता गया और उसकी सामूहिक शक्ति का विकास अब बिखराव के बदलने लगा। उस समय तक मारवाड़ी समाज के कई महान पुरुषों की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान व ख्याति फैल चुकी थी जिनमें श्री श्रीकृष्ण दास जाजू, श्री जमुनालाल बजाज, सेठ गोविन्ददास मालपाणी, श्री घनश्यामदास जी बिड़ला, श्री ईश्वरी प्रसादजी गोयनका आदि प्रमुख थे।

ऐसे समय समाज के प्रबुद्ध व जागरूक बंधुओं ने सामाजिक बिखराव को रोकने तथा अपनी पहचान को अधिक सशक्त बनाने के लिए अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन का गठन किया। करीब सात दशक से कार्यरत इस संगठन का अपना ऐतिहासिक योगदान रहा है।

यह सही है कि सामाजिग संगठन कोई राजनैतिक संगठन का प्रतिरूप नहीं होते। सामाजिक संगठन सामूहिक रूप से एक समुदाय विशेष की अच्छाइयों को व उसके कर्म पराक्रम को प्रतिष्ठित करने की मानसिकता व अवधारणा को मूर्तरूप देने का आंदोलन है और अन्य समाजों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने का सामूहिक प्रयास है। जातीय संगठन की यह नैतिक जिम्मेदारी होती है कि वह अपने लोगों के स्वाभिमान-सम्मान तथा शक्ति को और अधिक विश्वसनीय बनाए। ऐसे संगठनों में कार्यरत कार्यकर्त्ताओं में अपने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने की दृढ़ शक्ति उभरे यही संगठन की सार्थकता दर्शाती है। ऐसे संगठनों में सेवाभावी, निष्ठावान एवं समर्पित कार्यकर्त्ताओं का मनोबल मजबूत हो यह उस संगठन की पवित्रता का प्रतीक होता है। जब जब स्वार्थी पदलोलुप एवं चालाक लोग अपने निजी हितों के लिए संगठन को दूषित करने में सफल होते हैं तो कर्मठ कार्यकर्त्ताओं में एक पवित्र आक्रोश उभरना चाहिए- उनमें एक अपराध बोध का भाव हो कि निहित स्वार्थी संगठन के सम्मान को खंडित करने में सफल क्यों हो रहे हैं?

सामाजिक संगठनों की संरचना के शुरू के वर्षों में जिन उद्देश्यों, नीतियों व सामूहिक हित की भावनाओं से जो कार्य किए गए- समग्र समाज के विकास के लिए जिन मूल्यों को प्रतिष्ठित किया गया एवं सम्पूर्ण राष्ट्रहित में पूरी जातीय अस्मिता को प्रेरक बनाया गया वह आज धीरे धीरे लुप्त होती जा रही है। सामाजिक सुधार के प्रसंग हो या राजनैतिक चेतना का स्वरूप, हम अपने आप

को तेजी से अप्रसांगिक बनाते गए और लगता है तेजी से हम अपनी ऊर्जा, जोश और संवेदनशीलता खोते गए हैं। सामाजिक बदलाव के दौर में हम अपनी भूमिका का सही निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। आर्थिक एवं राजनैतिक दबाव को इस तेज गति में हम अपना महत्व नहीं बना सके हैं। दस करोड़ की संख्या वाला यह समाज आज कहां गया है? ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले समाज का यह हस बेहद शोचनीय है।

आज तो अन्य समाजों की तरह ही हमारा अपना समाज भी अपने ही सन्नाटे से घबराया हुआ है। आज तो हमारा कोई राजनैतिक वजूद भी नहीं है और न सशक्त सामाजिक संगठन- ऐसी स्थिति में आम कार्यकर्त्ता दिशाविहीन हो रहा है। समाज का आम व्यक्ति भटकाव की स्थिति में है। इस स्थिति से निकलने का रास्ता तलाशना होगा। यह घबराया हुआ समाज कल विघटित भी होगा एवं खंडित भी होने लगेगा क्योंकि न तो हम नैतिक मूल्यों की रक्षा कर पा रहे है और न हम अपने समाज के स्वाभिमान और अस्मिता की सुरक्षा कर पा रहे हैं। आज आम व्यक्ति का अभाव इतना गहरा है कि इसका जीना ही उसके लिए इतना कठिन, अपमानजनक और असांस्कृतिक बन गया है कि जीवन के प्रति सम्मान जैसा कोई भाव उसके भीतर अकुंरित ही नहीं होता और जब सामाजिक संगठन ऐसी स्थिति में कोई सार्थक भूमिका निभाने की नैतिकता भी खो रहे हैं तो ऐसे मूल्य विहीन एवं बिखरे हुए नैतिक मूल्यों के ताने बाने के कोई समाज लम्बे समय तक टिका नहीं रह सकता। यह व्यापक संकट है जिसका व्यापक पैमाने पर इलाज करने की हिकमत हमारे पास न हो तो भी उसकी चर्चा करने में कभी बात छुपानी नहीं चाहिए। खासतौर पर एक ऐसे समय जब समाज में किसी भी तरीके से धन कमाने और उस धन से अपने लिए विशिष्टता खरीदने की एक गजब होड़ मच रही है तब किसी सामाजिक आंदोलन जैसी व्यवस्था को सम्हाले रखने की सोच ही बेमानी हो जाती है।

आज तो सारी सामाजिक व्यवस्था और सामाज्कि तथा नैतिक मूल्यों को हमने एक ऐसे बाजार में बदल दिया है जहां सब कुछ बिकाऊ है। आज तो हमारे समाज में एक ऐसा वर्ग उभर कर आया है जिसकी सामन्तशाही प्रवृत्तियों ने तमाम मर्यादाओं को रौंद दिया है। एक छुपी हिंसा इस वर्ग की मनमानी का मजबूत आधार बनता जा रहा है। हिंसा का यह चेहरा न केवल विकराल होता जा रहा है बल्कि वीभत्स भी होता जा रहा है। यह बेहद खेदजनक है कि हमारी सामूहिक उदासीनता ने ही इस प्रकार की हिंसक वृत्तियों एवं वर्गों को प्रोत्साहित किया है। जरूरत है अपने वर्चस्व एवं अस्मिता की सुरक्षा के लिए समाज को पूरी शक्ति से उभारना होगा और ऐसे तत्वों से समाज को निजात दिलानी होगी।

हमने हटिंगटन की उस भविष्यवाणी को गंभीरता से नहीं लिया जो उसने २०वीं सदी के अंतिम चरण में दी थी कि २१वीं सदी में एशिया एवं उच्छृंखल एवं बाजारवादी सभ्यताओं के बीच निर्णायक संघर्ष होगा। हमें अपना सामाजिक संगठन इस निर्णायक संघर्ष के लिए मजबूत करना होगा। अपने समाज की अस्मिता-सम्मान व स्वाभिमान के लिए हमें सक्रिय भूमिका निभानी होगी। सन्नाटे के साये से समाज को बचाना होगा।

सामाजिक संगठनों की भी नए संदर्भ में अपनी भूमिकाओं को खोजना होगा। एक तरफ सामाजिक संगठनों में तेजी से सामंती मनोवृत्ति हावी हो रही है और दूसरी तरफ उपभोक्ता एवं पूंजीवादी व्यवस्था के सारे लक्षण समाज विकास के क्षेत्र में काम कर रही संस्थाओं की प्रकृति बन रही है। सामाजिक संगठनों का आधार तो व्यक्ति के स्वाभिमान- सम्मान- सुरक्षा- संवेदनशीलता और आत्मीयता की आधारशिला के रूप में विकसित करना रहा है- ऐसे में वर्तमान दबाव संगठन के स्वरूप को पूर्णरूप से क्षत विक्षत करे तो आश्चर्य नहीं होगा।

चिंता का विषय यह है कि कुछ लोग सामाजिक आचरण की धज्जियां उड़ाये, अपराध करे और सारे समाज के सम्मान को ठेस पहुंचाये फिर भी वे ही संगठन के बड़े पदों पर पहुंच जावे तब ऐसे संगठनों की सार्थकता समाप्त हो जाती है। सतह पर देखें और गंभीरता से विवेचन करें तो ऐसी परिस्थितियां मूल्य विहीन और आदिम किस्म के समाज का हिस्सा लगेगी। किसी सेवा भावी संगठन का यह चरित्र नहीं हो सकता। लेकिन विडम्बना यह है कि कुछ लोगों के भीतर यह विश्वास बन गया है कि जिसके पास धन बल एवं बाहुबल की ताकत है उसे कुछ भी करने का हक है और उनका यह विश्वास इसलिए बना है कि हमने यह व्यवस्था ताकत और पैसे वालों के पास गिरवी छोड़ दी है। जब पैसा जीवन से बड़ा हो जाए और इच्छाओं को बेलगाम बना दे तो किसी भी व्यक्ति, व्यवस्था एवं संगठन का अंत बेहद दर्दनाक होना स्वाभाविक होता है।

हम एक नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। हमारी वर्तमान व्यवस्था से समाज का विश्वास उठता जा रहा है। अपनी सुरक्षा का भरोसा वह खो रही है। ताकत और पैसे के मद में चूर एक पीढ़ी जहां अपनी जिद पूरी करना जानती है और प्रतिष्ठा खरीदना उसके लिए सहज हो गया है उसके लिए यह महत्वपूर्ण नहीं कि उनकी इन हरकतों से वर्षों की साधना, शालीनता एवं सौहार्दता से विकसित सामाजिक व्यवस्था एवं संगठनों में बिखराव एवं विकृतियां उत्पन्न होगी और तब उनका व्यवहार पूरी जातीय गरिमा को लांछित कर देगा। ऐसे लोगों के अतीत की जानकारी बहुत कम लोगों को होती है क्योंकि ऐसे लोग अपने सिवाय दूसरों की जिन्दगी को बहुत ओछी चीज समझते हैं दूसरों की मान मर्यादा का सम्मान करना उनके संस्कार में नहीं होता। हम ऐसे लोगों को जब तक बेनकाब नहीं करेंगे और उन्हें सामाजिक संगठनों में हावी होने से नहीं रोकेंगे तो हमारी सामाजिक व्यवस्था अपराधी प्रवृत्तियों का शिकार हो जायेगी।

अब समय आ गया है कि समाजिक संगठन अपने समाज की सुरक्षा सम्मान एवं स्वाभिमान की प्रतिष्ठा के संरक्षण के साथ सामंती प्रवृत्तियों और संरचना बजार व्यवस्था के दबाव में खंडित होते अपने अस्तित्व की नई संरचना को और समाज को पूर्ण शक्ति से संगठित करे। इस समय तो लगता है एक सन्नाटा छाया हुआ है। हमारी आस्थाएं बिखर रही है- हमारा विश्वास टूट रहा है- नई पीढ़ी का भरोसा भी हमारे ऊपर नहीं रहा- इसलिए पूरी ताकत से अपनी अस्मिता की रक्षा की लड़ाई में जूझें। हमारी उदासीनता हमारे अपने अस्तित्व के लिए बहुत भारी सिद्ध होगी।●

आवो दिवाली पर खुशियों के साथ आत्मदीप जलाएं

✍ रामनिवास लखोटिया, नई दिल्ली

भगवान बुद्ध का अंतिम संदेश अपने शिष्य भद्रक के लिए था- 'अप्पा दीपो भव' (अपने दीपक आप बनो) यह संदेश आज भी दिवाली के पावन पर्व पर हमारा मार्ग दर्शन करने में सक्षम हैं। यह सच है कि चाहे गरीब, चाहे अमीर, सभी भारतीय और विशेषकर हिन्दू धर्म के अनुयायी किसी न किसी रूप में दीपावली को बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाते हैं और फिर मनाना भी कैसा, अपने घरों को चाहे नये दीये जलाकर और चाहे ट्यूब लाइट और आधुनिक बल्बों की कतार या मिनी बल्बों की कतार से घर के द्वारों, खिड़कियां, अट्टालिकाएं और समूचे भवन को प्रकाशमान कर देते हैं। इसी प्रकार बाजार में रोशनी से सर्वत्र प्रकाश दिखता है और अमावस्या की अंधियारी रात को एक बार हम भूल जाते हैं। दीपावली के इस राष्ट्रीय पर्व पर यदि हम अपने प्रेम का दीपक जलाकर हृदय को प्रकाशमय करें और मन से राग द्वेष जैसे विकारों को निकाल दें तो सच्चे अर्थों में दीपावली का मनाना सार्थक सिद्ध होगा।

दिवाली का आध्यात्मिक संदेश

दिवाली का आध्यात्मिक संदेश अधिक महत्वपूर्ण है। और यदि हम इसके आध्यात्मिक संदेश की ओर दृष्टिपात करें तो अपना स्वयं का जीवन तो सफल कर ही सकते हैं, हम हमारे मित्रों, सहयोगियों और मिलने जुलने वाले बंधुओं का जीवन भी प्रेम से भरकर प्रकाशमान कर सकते हैं। आध्यात्मिक सिद्धान्त को अगर बाह्य दृष्टि से देखा जाए तो रोशनी एक प्रतीक मात्र है, लेकिन असली कार्य दीपावली का है मन के अंधकार को भगाना, हृदय से राग द्वेष के विकारों को निकालकर बाहर भगाना और हमारे मानव जन्म को साकार करने के लिए जो तत्व आवश्यक है, उन्हें उजागर करना। सबसे महत्वपूर्ण तत्व यदि स्वयं की और अपने आसपास के लोगों की शांति के लिए कोई है तो वह है निस्वार्थ प्रेम का तत्व, और प्रेम का शत्रु है लोभ, मोह, राग और द्वेष। हां, लोभ को हटाने से तो हम अपने ही मन को शुद्ध करते हैं लेकिन किसी के प्रति ईर्ष्या की भावना को समाप्त करके और बढ़ते हुए मित्रों के प्रति मुद्रित भावना रखकर हम दीपावली के वास्तविक अर्थ को अपने जीवन में उजागर कर सकते हैं। जहां गरीबों के प्रति करुणा भावना हो और समानता वाले व्यक्तियों के प्रति मैत्री भावना हो, वहां सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि जो मित्र, सखा, रिश्तेदार या जान पहचान वाला व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक या अन्य कोई तरक्की कर रहे हैं या कर चुके हैं उन्हें देखकर प्रसन्न हों। हां, यह कार्य कठिन लगता है लेकिन असंभव नहीं है बल्कि प्रयत्न से सरल भी हो जाता है और इससे हमारा हृदय रागद्वेष की मलीनता से विहीन होकर बहुत ही निर्मल और सरल बनता है। इसलिए द्वेष के स्थान पर मैत्री और ईर्ष्या के स्थान पर मुद्रित भाव रख कर ही हम प्रेम के तत्व को, विशेषकर निस्वार्थ प्रेम के तत्व को दूसरों तक फैला सकते हैं। सबसे अधिक लाभ प्रेम की भावना से जिसको होता है वह व्यक्ति कोई और नहीं हम ही हैं सब। इसलिए क्योंकि प्रेम की भावना पैदा होने से जब ईर्ष्या, द्वेष की भावना समाप्त होगी तो दिन रात जलन की भावना से हमारे स्वास्थ्य को नुकसान करने वाले तत्व भी समाप्त होंगे और मन में जो एक ख्याली जलन की भावना व्याप्त रहती है वह समाप्त होने पर मन भी निर्मल होगा। ऐसी भावना से प्रेम अपने आप हमारे हृदय में उत्पन्न होगा। इस प्रकार से हमारे हृदय में घृणा, द्वेष और ईर्ष्या के स्थान पर प्रेम, करुणा और वात्सल्य आदि भाव जगेंगे। तब हमारे मन और हृदय का अंधेरा दूर होकर उसमें वास्तविक ज्ञान का दीपक जलेगा। यह प्रेम रूपी ज्ञान का दीपक हमें सही अर्थों में दीपावली उत्सव की भावना को, हमारे जीवन को सार्थक बनाने में बड़ी मदद करेगा। बल्कि हमें ही नहीं हमारे परिवार, स्वजनों, मित्रों, पड़ोसियों और आसपास के मिलने जुलने वाले व्यक्तियों में भी प्रेम का संचार होगा। प्रेम से प्रेम उपजता है। यदि हम प्रेम की भावना दूसरों के प्रति जगाएंगे और दिवाली के पर्व पर यह व्रत लेंगे कि हम दूसरों के प्रति ईर्ष्या और द्वेष के स्थान पर मुद्रित भाव और मैत्री भाव रखकर प्रेम का संचार करेंगे तो सबसे अधिक लाभ हम अपने आपको ही पहुंचायेंगे। तभी हम देखेंगे कि बाहर जो हजारों-लाखों दीप अलौकित हो रहे हैं उससे अधिक जो दीप हमारे हृदय में प्रेम का आलौकित हुआ है उसकी रोशनी उन सब दीपों से अधिक है जो केवल बाहरी है। इस प्रकार हमारे मन के अमावस्या के अंधेरे को हम प्रेम की दीपक से जलाकर असली रूप में दीपोत्सव मनाने का कार्य करेंगे।

नई दृष्टि से अज्ञान का अंधकार मिटावें

हमारे संतों ने ठीक ही कहा है कि लक्ष्मी निरंतर उसी के पास रहती है जो विष्णु अर्थात ज्ञान कारक स्वभाव के होते हैं, और हम ज्ञान कारक स्वभाव के तभी बन सकते हैं जब हमारे मन में ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आदि अंधकार के स्थान पर आत्मज्ञान के, प्रेम की दीपक जलें। पतंजली ऋषि ने योगसूत्र (२.३) में मानव जीवन के कष्ट के कारणों में ५ विशेष कारण बताए हैं। यथा- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेष, क्लेश अर्थात् मानव जीवन के ५ मुख्य क्लेश के कारण हैं- अज्ञान, अभिमान, राग, द्वेष और मृत्यु का भय। मृत्यु का भय और अज्ञान तो अध्यात्म के मूल मंत्र अर्थात् ध्यान के पथ पर चलकर मिट सकते है। लेकिन अभिमान, राग और द्वेष जैसे क्लेशों को तो हम अपने प्रयत्न से ही मिटा सकते हैं। सबसे बड़ा प्रयत्न है 'प्रेम' और मैत्री। अब वह अवसर आ गया है दिवाली का। इसलिए आइये, अब हम सब दीपावली के अवसर पर इस नई दृष्टि से सच्चे प्रेम से दीपावली मनाएं तभी तमसो मां ज्योतिगर्मय की भावना से स्वयं भी आलौकित हो, आनंदित हो और दूसरों के जीवन को भी आलोकित एवं आनंदित करें। आवो, दिवाली पर हम सब इसी ज्ञान की आत्मदीप जलाएं।●

मैनेजमेंट और विकसित भारत का सपना

लेखक : भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम एवं वाई सुंदर राजन
अनुवाद : हरिमोहन शर्मा

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने भविष्य के भारत की तसवीर खींची है 'इक्कीसवीं सदी का भारत-नवनिर्माण की रूप रेखा' में। वाई सुंदर राजन के साथ लिखी उनकी इसी किताब से एक खास संदेश-

हम जानते हैं कि सदा व्यस्त रहने वाले महा प्रबंधक के पास हमेशा समय की किल्लत रहती है। फिर भी क्या वह हफ्ते में कुछ घंटे भी यह सोचने के लिए नहीं निकाल सकता कि भारत कैसे एक विकसित देश की हैसियत पा सकता है? अपनी एजेंसी का महाप्रबंधक होने के नाते, उसे अपनी एजेंसी के लिए कुछ भी करने के अधिकार प्राप्त हैं। चतुर व्यवसायी होने के नाते वह कुछ ऐसी योजनाओं में पूंजी निवेश कर सकता है, जो आगे चलकर उसकी एजेंसी के लिए फलदायक हों। या, इस हैसियत से वह स्थानीय प्रशासक की तब मदद कर सकता है जब वह लोगों की समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास कर रहा हो। एक और उदाहरण पेश है। उसकी भेंट कई उत्साही, बुद्धिमान योग्य और कर्मठ नौजवानों से होती है जिनके पास एक उम्दा योजना है। उसे इन नौजवानों की मदद करनी चाहिए। वह कुछ ऐसे लोगों के समूह को एक नए विकासोन्मुखी भारत के लिए अपना योगदान देने के लिए प्रोत्साहित भी कर सकता है। यह भी संभव है कि आपमें से कुछ लोग मिलकर अपनी योग्यताओं का कोटि उन्नयन करें और अपने बेहतर कौशल का उपयोग विकसित भारत के निर्माण में अपने योगदान के रूप में दें। या अपनी संस्था के तरुण सदस्यों को बताएं कि वे भी कैसे उनके समान निपुण और सक्षम हो सकते हैं। या ऐसा ही ज्ञानदान आप अपने पड़ोस के किसी तरुण को दे सकते हैं। जब आप कुछ पौधे लगाएंगे, तब हो सकता है, उनमें से कुछ मुरझा जाएं, मगर यह भी कि कुछ पल्लवित होकर एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लें।

मान लीजिए , आप एक सरकारी विभाग में क्लर्क हैं। आप चाहें, तो आप आसानी से अपने काम में थोड़ी सी तब्दीली लाकर अपना काम ज्यादा मुस्तैदी से, ज्यादा कुशलता के साथ, कर सकते हैं, किसी नई सार्वजनिक मांग, या किसी योजना की फाइल को जल्दी से आगे रवाना कर सकें। यदि आप एक ऐसा माहौल पैदा करने में मददगार हो सकें कि सरकारी (केंद्रीय, राज्यों के और नगरपालिका के काम) तेजी से और न्यायपूर्ण पद्धति से संपन्न हो सकते है, तो आपने एक विकसित भारत के लिए सही और सच्चा माहौल तैयार कर दिया है। यह सोचकर निराश होने की जरूरत नहीं हैं कि एक अकेला क्या कर सकता है। बाढ़ छोटी-छोटी बूंदों से मिलकर ही बनती है। एक फैक्टरी में काम करने वाला कामगार मन ही मन यह निश्चय करता है कि वह अपनी उत्पादकता में वृद्धि करेगा, और उत्पाद की गुणवत्ता में भी। जापानियों ने अपनी कार्य शैली को और अधिक प्रभावी और सक्षम बनाने के लिए जो नायाब तरीका ढूंढ निकाला है वह है तृणमूल स्तर के कामगारों के सुझावों पर ध्यान देना और उन्हें अमल में लाना। हमारी कार्यशैली व कार्यविधि उससे भिन्न है। लेकिन आप चाहें तो जापानियों की इस शैली को अपना सकते हैं। हर स्तर पर कार्य करने वाले भारतीय के मन में मंत्र की भांति यह सूत्र गूंजते रहना चाहिए कि मुझे सदा भारत को विकसित देश बनाने के लिए कुछ न कुछ योगदान देते रहना है। यह निश्चय जितने अधिक लोगों के मन में ध्वनित होगा उतना अच्छा है।

मेरे सह लेखक वाई एस राजन ने हाल ही में एक सभा में भाग लिया था, जहां अमरीका की ओर से भारत पर लगाई जाने वाली पाबंदियों के प्रभावों पर चर्चा हुई थी। तब तक अमेरिका ने उन पाबंदियों के ब्यौरे की घोषणा नहीं की थी। चर्चा में भाग लेने वाले सभी भारतीय थे, और विदेशी बैंकों में काम करते थे। एक बुजुर्ग सज्जन ने जोरदार शब्दों में कहा कि 'हमें अपने भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए और पाबंदियों को नगण्य बनाने की दिशा में कार्यवाहियां करते रहना चाहिए।' उन्होंने अपनी जापान यात्रा की एक घटना सुनाई । उनके होटल के कमरे में नल का पानी रिस रहा था, जिससे उनको नींद नहीं आ रही थी। उन्होंने शिकायत की। दो आदमी आए और आधा घंटे तक नल की मरम्मत करते रहे। फिर उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वे अब संतुष्ट हैं। उनके संतोष व्यक्त करने पर उन्होंने असुविधा के लिए खेद व्यक्त किया और अंत में यह भी कहा कि होटल के प्रबंधक ने यह निश्चय किया है कि उनसे उस रात का होटल का किराया नहीं लिया जाएगा। अब तक वे इसे उन दोनों की पेशेवरी सौजन्यता मान रहे थे। लेकिन, जब सिर झुकाकर विनम्रता से उन्होंने कहा, 'सर! देखिए नल के उस हिस्से को, जिसकी वजह से आपको असुविधा हुई थी। गौर से देखिए यह हिस्सा जापानी नहीं है, आयातित है। आगे से सर, हम बेहतर हिस्से का इस्तेमाल करेंगे।' इस घटना से हमें यह संदेश मिलता है कि जापानी लोग अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं पर कितना गर्व करते हैं। वे हमेशा अपनी सेवा से अपने उत्पादों को बेहतर बनाते रहते हैं। यदि हम सब भारतीय अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करना आरंभ कर दें, तब भारत आशा से पूर्व ही विकसित देश होकर दिखा सकेगा।

पुस्तक- इक्कीसवीं सदी का भारत (विजन २०२०)●

बापू के विश्वास में धर्म की व्याख्या

✍ चारूग्रही

गांधीजी के व्यक्तित्व की परिभाषा अनेक लोगों ने अनेक प्रकार से दी है। किन्तु कोई भी परिभाषा दी जाए, यह निर्विवाद रहता है कि वह बड़े चतुर राजनीतिज्ञ थे। आमतौर से राजनीतिज्ञ लोग धर्म विषयक गहराइयों में नहीं जाते। क्योंकि उनके सामने देश और जाति की निर्बलता, निर्धनता तथा अन्य सौ सौ समस्याओं के दांव पेंच यों फैले बिखरे रहते हैं कि धर्म का क्षेत्र उनका स्पर्श तक नहीं पाता। गांधीजी के साथ ऐसा न था। उनकी तो जैसे धर्म ही टेक था। क्योंकि उनके लिए सारा जीवन ही एक अभंग वस्तु रहा।

इस भाव में अर्थात् जीवन को अभंग इकाई के रूप में स्वीकार करते हुए उन्होंने एक बार कहा कि यदि कोई व्यक्ति जीवन को वस्तुत: समझना चाहता है, उसे यदि इसकी सच्ची महत्वकांक्षा है, तो वह जीवन के किसी भी विषय और अंग से अछूता नहीं रह सकेगा। यही कारण उन्होंने बताया कि 'मेरी सत्य के प्रति निष्ठा और भक्ति मुझे खींच कर राजनीति के क्षेत्र में ले आयी। मैं तो सम्पूर्ण विनम्रता से नि:संकोच यहां तक कह सकता हूं कि जो लोग राजनीति और धर्म का परस्पर सम्बन्ध नहीं मानते वे धर्म का अर्थ ही नहीं जानते।'

इसी प्रसंग में आगे उन्होंने कहा कि 'इस नश्वर संसार के नश्वर साम्राज्य की मुझे इच्छा नहीं है, मुझे यदि इच्छा है तो स्वर्ग के साम्राज्य की अर्थात् आध्यात्मिक मुक्ति की। मेरी सारी देशभक्ति भी तो शान्ति और मुक्ति यात्रा की दिशा में एक पड़ाव मात्र है। मेरे लिए ऐसी राजनीति की कहीं कोई सत्ता ही नहीं जिस में धर्म का समावेश न हो। बहुत अंशों तक मनुष्य की राजनैतिक असफलता का कारण ही उसकी धर्म निरपेक्षता है। होते होते इस धर्म निरपेक्षता की प्रवृत्ति का ही परिणाम यह हुआ है कि राजनीति और धर्म दोनों ही कुछ के कुछ समझे जाने लगे हैं।

इस प्रकार गांधी जी के लिए धर्म की स्वतंत्र सत्ता नहीं होती, वह भी मानव की अनेक प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति ही रहता है। अनुभव की अग्निपरीक्षा में उनकी नीति न राजनीति होती है, न धर्म नीति, और न समाज नीति या दर्शन या आचार विचार : वह तो इन सब का सम्मिश्रण, समन्वय ही रहती है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का यह मन्तव्य यथार्थ ही है कि गांधीजी के 'व्यक्तित्व का निर्माण ही धार्मिक है जिस में उनकी ह्रास परिहास प्रियता ने मिल उन्हें बड़ी कुशलता और सफलता के साथ

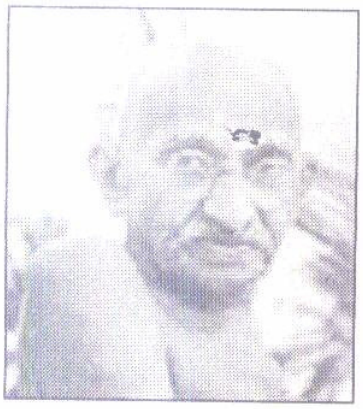

साधारण जन मानव के अति निकट ला दिया।'

गांधी जी का जितना भी कृतित्व है उसे हम किसी भी पहलू से देखें, यह प्रत्यक्ष हुए बिना नहीं रहता कि उनके लिए ईश्वर परम महत्व और अत्यंत वास्तविकता की वस्तु है। ईश्वर के रूप में उन्हें एक ऐसी सत्ता का अनुभव होता है जो हर क्षण उनके एकदम निकट है, उनके मन को मथा करती है, क्षुब्ध करती है, और उन पर अधिकार कर लेती है। किसी भी स्थिति या समस्या के आने पर उनके मन में यदि सन्देह होता तो वे नि:शंक होकर ईश्वर के भरोसे छोड़ देते। उस समय ईश्वर से उन्हें अपने संदेहों का उत्तर मिलता भी, और नहीं भी।

हां, मिलता भी और नहीं भी। नहीं भी इस अर्थ में कि पोथी पुराणों में कही हुई कोई रहस्यमयी दिव्य वाणी उन्हें सुनाई नहीं देती, और मिलता भी इस रूप में कि उन्हें सचमुच लगता जैसे उत्तर मिल गया हो। फिर, यह उत्तर इतना सात्विक और विशुद्ध प्रमाणित भी होता कि उसकी कसौटी पर कस लेने के बाद मनुष्य के स्वप्नों और कल्पनाओं का चित्र मात्र ही शेष बच सकता है। अनेक स्थलों पर उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'इस अलक्षणीय रहस्यमयी शक्ति को मैं देख नहीं पाता पर उसका अनुभव निरन्तर करता हूं। अनुभव द्वारा ही वह सुगम भी है। उसकी सत्ता प्रमाणों से सिद्ध नहीं होगी, क्योंकि जो कुछ भी इन्द्रियों द्वारा गम्य है उस सब से यह शक्ति भिन्न है।'

किसी विदेशी विचारक अथवा पत्रकार से चर्चा चलने पर उन्होंने यहां तक कहा- 'यह मुक्ति अथवा तर्क का विषय कभी नहीं बन सकता। मुझ से यदि आप कहें कि औरों को युक्ति द्वारा विश्वास करा दूं, तो मैं हार मानता हूं। किन्तु इतना मैं आप से कह दूं कि आप और मैं इस कमरे में बैठे हैं इस सचाई से अधिक निश्चय मुझे उसकी सत्ता का है। मैं हवा और पानी के बिना जी सकता हूं, उस के बिना नहीं। मेरा अंग भंग कर दिया जाए तो मैं नहीं मरूंगा, पर ईश्वर के प्रति मेरा विश्वास नष्ट कर दें तो मैं तत्क्षण मर जाऊंगा।'

गांधी जी हिन्दू धर्म की महती आध्यात्मिक परम्परा के अनुसार दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि हम जैसे ही अपनी पाशविक वासनाओं द्वारा होने वाले पतन के कूप से ऊपर उठ कर आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ऊंचाई तक पहुंच जाते हैं कि जीव मात्र में हमारी समदृष्टि है। मनुष्य निरा अल्प है किन्तु इस अल्प ने ही महाम को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है, यद्यपि वह महान सर्वा गुणातीत वर्णनातीत एवं मानातीत है।

गांधीजी की भावना अन्य धर्मों के प्रति निष्क्रिय सहिष्णुता की नहीं बल्कि सक्रिय

आदर की है। क्योंकि सभी धर्म अन्ततः तो एक महान धर्म के साधन मात्र है। उन्होंने एक स्थल पर लिखा है, 'मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि हिन्दू धर्म को निश्चय ही मैं अन्य धर्मों से श्रेष्ठ मानता हूं, किन्तु मेरा धर्म हिन्दू धर्म से परे चला जाता है, क्योंकि वह मनुष्य की सारी प्रवृत्ति और प्रकृति को ही बदल देता है, वह जीवन को निरन्तर शुद्ध करता रहता है।'

गांधी जी के अनुसार सत्य के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, और सत्य की उपलब्धि, उसके अनुभव का एकमात्र उपाय प्रेम अथवा अहिंसा है। सत्य का ज्ञान और प्रेम का आचरण आत्माशुद्धि के बिना असंभव है। जिसका अन्तःकरण शुद्ध है उसे ही ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है। अन्तःकरण की शुद्धि के लिए राग द्वेष से मुक्ति, मनसा वाचा कर्मणा पक्षपातरहितता, मिथ्या भय एवं अभियान का त्याग, ऐन्द्रियिक प्रवृत्तियां से सतत संघर्ष, और मन के तर्क-वितर्कों पर विजय अत्यंत आवश्यक है। और इनका मार्ग भी तपस्या और साधना है। तप से ही आत्मा निष्कलुष और शुद्ध हो सकती है।

तप और संयम विशिष्ट व्यक्तियों के ही लिए नहीं, जनसाधारण के लिए भी सहज और सम्भव है। यह अवश्य है कि यहां वास्तविकताओं को उचित और पूर्ण रूप से देखना समझना होगा। उदाहरण के लिए, जननेन्द्रिय का संयम सब के लिए आवश्यक है। परंतु आजन्म ब्रह्मचारी कुछ व्यक्ति ही रह सकते हैं। स्त्री-पुरूष का संयोग केवल शारीरिक सुख ही नहीं बल्कि प्रेम की अभिव्यक्ति तथा जीवन-श्रृंखला बनाये रखने का भी साधन है। ऐसा 'काम' लज्जा अथवा पाप का विषय नहीं हो सकता। ब्रह्मचर्य से अभिप्राय जनसाधारण के लिए यही है कि ऐन्द्रियिक वासनाएं मन की एकता को नष्ट न कर सकें। निश्छल मन से संयमपूर्वक जीवन पथ को पार करना ही सब के लिए श्रेयस्कर है।

अतः स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजी की दृष्टि से आत्याधिमिकता की कसौटी यह न थी कि मनुष्य अपने प्राकृतिक संसार से पृथक हो रहे, बल्कि यह थी कि सब के बीच यहीं रह कर सब से प्रेम रखते हुए कर्म करें। 'यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवभूत् विजानतः।' अपने पड़ोसियों से भी मनुष्य 'आत्मैव' प्रेम करे। जीव मात्र को स्वतंत्रता और समानता की प्राप्ति होना चाहिए। इसके लिए विश्व भर में स्वतंत्र मानवता की स्थापना आवश्यक है। इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को जो स्वीकार करेंगे उन्हें जाति और धर्म, धन और शक्ति, वर्ग और वर्ण, एवं राष्ट्र तथा विश्व के भी सभी कृत्रिम बन्धनों को छिन्न भिन्न करना आवश्यक हो रहेगा।●

+++ ○○ +++

अब कहां गई हिन्दी

*** कोमल अग्रवाल, सचिव- मारवाड़ी महिला सम्मेलन, जूनागढ़**

करते है तब मन से वंदन,
जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का,
आराधना अपनी भाषा का
यह अपनी बंधी हुई अंजूरी,
यह अपने सुगंधित शब्द सुमन
सीखा जिसको मां के आंचल से,
यह माध्यम उस जनभाषा का।
अंग्रेजों भारत छोड़ो गांधी ने उच्चारा था
जय जवान जय किसान यह भी हिन्दी का नारा था
भूल गये क्या तुलसीदास, बाल्मीकि या कालिदास
इन सबने हिन्दी पे 'जीवन वारा था
यह ऊंचाई चन्दरवरदाई की यह सुर सिंधु की गहराई
निराला का चमत्कार यही, जयशंकर की जयजयकार यही
सूफी संतों का भक्ति गीत, मीरा का यह मोहनी मीत
बच्चन ने जिसे पुकारा था, महादेवी का वीर वह सारा था
पंत की ललकार यही, कवि भूषण की तलवार यही
यह गर्जन अपनी संस्कृति का, यह गुंजन अपनी भाषा का।
इसमें प्रतिबिम्बित है अतीत, साकार हो रहा वर्तमान
लेकिन अब कहां गयी हिन्दी, कहां गया वो आदर मान
अंग्रेजी को रट-रट के भारतीय दिखाते अपनी शान
पर हिन्दी ऐसी संकटमोचन भाषा है
कि जब भी इसके अस्तित्व पे संकट आया है
इतने इतिहास दुहराया है
इंटरनेट पर यह आ रही, मोबाइल पर भी छा रही
यहां तक कि अंग्रेजों को भी लुभा रही
भारत का यह अमर चिन्ह, दुर्जय संस्कृति का प्रतीक
यह दर्शन अपनी संस्कृति का यह दर्पण अपनी भाषा का
करते हैं तब मन से वंदन, जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का, आराधना अपनी भाषा का।

हाथ मिलाइये

आंगन हो गरिमापूर्ण
इन्सानियत से सरोकार हो
दूर हुए जो संगी-साथी
उनसे पुनः हाथ मिलाइये।।
कण-कण में बिखरा दुलार इतना
मन को रोमांचित है करे
कट सके व्यथा-हर पल की
ऐसी विद्या बैठाइए।।
पुकार हो सरल, कोमल
धड़कनों में अमिट प्यास हो
चले उस प्रीत डगर पर
जिधर बसा सुखी संसार हो।।
विश्वास की कड़ी बढ़े एकता का राग हो
खिला रहे समाज सुन्दर
ऐसी भावना का पल पल विकास हो।।

*** नरेन्द्र कुमार बगाड़िया, कलकत्ता**

राजस्थान का उभरता नया औद्योगिक व सांस्कृतिक रूप

दरसण करौ नव नवेला राजस्थान रा

आप भी क्या उस ओर कदम बढ़ायेंगे ?

✍ डॉ. मनोहरलाल गोयनका, जमशेदपुर

अब सूं सो-दो सौ बरस पैली राजस्थान री स्थिति इसी कोनी ही, जिसी आज है। पाणी रौ दुकाळ, अन्न रौ अल्प उत्पादन अर रोजगार धंधां री कमी रै कारण हजारूं परिवार राजस्थान सूं पलायन कर ग्या अर जठै रोजी-रोटी रौ प्रबंध हुयौ, उठैई जायर बसग्या। आज राजस्थान रा प्रवासी करोड़ां री संख्या में देश रै अन्य प्रदेशां मै- शहरां अर गावां मै बस्योड़ा है अर रूजगार धंधौ कर रैया है। रूजगार री तलाश मैं म्हारौ पिताश्री नै भी प्रवास पर रैणूं पड़यौ। जमशेदपुर में उणां रौ धंधौ जम्यौ, जणां दस बारा बरस री उम्र में म्हानै ई जलमभोम रौ त्याग करणूं पड़यौ अरम्है परिवार रै सागै जमशेदपुर आयगौ। राजस्थान म्हारी जलमभोम रैयी है पण कर्म भूमि बिहार (इब झारखंड) बणगी अर सारी जिन्दगी अठै ई कटगी। अंतिम सांस भी अठैई ली जावैली इण री प्रबल संभावना है।

म्है राजस्थान सूं हजारूं मीलां दूर रैवूं। राजस्थान में आबो जाबो ई नाममात्र रौ। राजस्थान छोड़यां पछै मुश्किल सूं पांच सात बार अर अेक बार मैं दस पांच दिनां सूं बेसी रैणूं कोनी हुयौ। पण म्हारी आत्मा राजस्थान में ई रैवै। जलम भोम सूं इसौ लगाव है कि भौतिक रूप सूं राजस्थान सूं दूर होता हुयां भी आत्मिक रूप सूं राजस्थान म्हारौ आदर्श अर प्रेरणा स्रोत रैयो है। राजस्थानी संस्कृति सूं जुड़ाव तो अधिकांश प्रवासी राजस्थानी राखै, पण राजस्थानी भासा सूं म्हारौ लगाव अब छानो कोनी रैयो। यो ई कारण है के राजस्थान सूं जुड़ाव बणा र राखणै खातर म्है राजस्थानी पोथियां अर राजस्थान सूं संबधित अखबार अर पत्र पत्रिकावां रौ अध्ययन निरंतर राख्यौ है। जका प्रवासी केईदशकां पैली राजस्थान सूं बारै आयगा अथवा उणां रा पूर्वज आया, उणां नै अक्सर आचिन्ता सताती रैवै है के उणां रा राजस्थानी भाईयां री स्थिति अब किसीक है? अधिकांश का परिवारजन अर सम्बन्धी राजस्थान मैं भी रैवै, इण सूं आचिन्ता सुभाविक है। पण उणा नै किणी तरै की चिन्ता री जरूरत कोनी। वै राजस्थान मे मजै सूं है। शायद प्रवासी भायां सूं भी बेसी सुकी है, सम्पन्न है। तिलां में सूं तेल निकळौ चायै मतना निकलौ, पण राजस्थान रै रेत रै खेतां सूं अब तेल जरूर निकलसी। ओ वोई तेल है, जका नै प्राप्त करर खाड़ीरा देस मालामाल हो रैया है। उठै धन रा परनाळा बैवै है अर शेखां री आंख्यां कोनी खुलै। राजस्थान में पाणी रौ रोजणूं सदीव रैयो है। पण कोलकाता रै अेक होटल मै पाणी रौ अकाल समझ में कोनी आयौ। होटल भी इसौ जठै अेक रूम रौ भाड़ौ केई हजार हुवै।

अेक प्रवासी राजस्थानी, मारवाड़ी रै सपूत री बारात कोलकाता गयी है। इण दिनां करोड़पतियां अर लखपतियां री बारातां होटलां में रुकै लागी है। बारात में गया लोगां नै होटल में पीबा को पाणी कोनी मिल्यौ। शराब तो भरपूर ही। पण देसी लोगां नै शराब सूं प्यास बुझावण री आदत कोनी। शौक सूं दो अेक पेग वै भलांई चढ़ा ल्यौ, पण पाणी जियां पविणौ संभव कोनी है। इब बाराती तो बाराती ई हुवै। बाराती खातिर मौज मस्ती अर खाणूं-पीणूं ई प्रमुख है। किणी री इज्जत आबरू री चिन्ता वै क्यूं करै? सौ बरात सूं पाछा आतां ई लोगां सूं शिकायत करै लाग्या के नगर सेठ का बेटा का ब्याव में उणा नौ पीबा खातर पाणी तक कोनी मिल्यौ।

बी होटल में, के दूजा होटलां में पाणी री कमी क्यूं रैवै, मनै मालूम कोनी। अरब देसां में पाणी री परेशानी जरूर है। वै देस तेल उत्पादक देस मान्या जावै है। वै तेल रौ निर्यातकरै अरपाणी रौ आयात। राजस्थान में भी पाणी री अल्पता रैती आयी है। जणांई कैवत चाल पड़ी ही के राजस्थान री धरती में पाणी की जगां रक्त रौ सिंचन हुवै अर अनाज री जगां सूरबीर पैदा हुवै। पण आज स्थिति बदलगी है। सरबीरता तो हवा होयगी अर अनाज पैदा हुवै लाग्यौ है। महाराजा गंगा सिंह जी री मेहरबानी सूं बाड़मेर, जयसलमेर क्षेत्र नै छोड़र, बाकी क्षेत्रां में भरपूर फसल हुवै लागी है। अनाज ई कोनी, मसालौ ई मौकलौ पैदा हुवै। आंकड़ा बतावै है कि देस मांय लगभग पांच हजार करोड़ रुपयां रौ साठ किस्म रौ मसालौ पैदा हुवै। इण में सूं सतरा किस्म रौ मसालौ राजस्थान में पैदा हुवै। कदै का राजपूताना अर अब का राजस्थान में पैदा हुवै- जी रौ, धाणूं, मेथी, सूंफ, सरसौं आद। उत्पादन री मात्रा रै सागै-सागै गुणवत्ता री दृष्टि सूं भी इणां रौ खास महत्व है। राजपूताना अर राजस्थान में, आजादी पूर्व रा रजवाड़ां अर स्वतंत्रता मिल्या पछै रा अेकीकृत राजस्थान में जमीन-आसमान रौ अंतर है। राजस्थानी प्रवासियां नै इण विकास अर समृद्धि री जाणकारी हुवौ चायै मतना हुवौ, पण राजस्थान निवासी बखूबी इण रै अनुभव कर रैया है। सांस्कृतिक रूप सूं सम्पन्न राजस्थान अब धन-धान्य सूं भी सम्पन्न राज्य बणग्यौ है। केई इसा काम हो रैया है, खोज रा नतीजा आया है, जिण सूं साफ-साफ नजर आवै है के राजस्थान री धरती सोनो उगवैली। इण री सरूवात हो चुकी है।

तेल अर प्राकृतिक गैस माथै कदै अरब देसां रौ अेकाधिकार हौ। वो अधिकार

भारत तोड़ चुक्यौ है अर इण क्षेत्र में राजस्थान रौ धमाकादार प्रवेश चंद दिनांरी बात है। बालू सूं तेल निकालणूं पैली एक मुहावरौ हौ। पण यो मुहावरौ अब वास्तविकता है। मरूभोम की रेत रै नीचै तेळरी खोज हुई है। मरूस्थलीय केई क्षेत्रा में परीक्षण रौ उत्साहपूर्ण नतीजौ आयौ है के बाड़मेर, जयसलमेर अर श्रीगंगानगर अब तेल उत्पादक क्षेत्रां में गिण्या जावैला। अढै तेल अर प्राकृतिक गैस रौ विशाल भंडार मिल्यौ है। आ चंड्खाना री गप्पा कोनी, राजस्थान सरकार री एक विज्ञप्ति में यो रहस्योद्घाटन कर्यौ गयौ है। राजस्थान रौ रेगिस्थान अब अरब देसां रा तेल कूंवां सूं पट्या पड्या रेगिस्थान सूं होड़ लेबा की तैयारी में है। केई स्थानां पर तेलकुंवा री खुदाई अर इणां मैं प्राप्त तेल अर गैस की उत्साहपूर्ण मात्रा में उपलब्धि सूं आ उम्मीद बेणी है के विकास को सूरज अब कोलकाता सूं कोनी, राजस्थान सूं उगैलौ। खारपार क्षेत्र में चीनवाला डिब्बा में लगभग दो हजार मीटर नीचै उच्च गुणवत्ता वाली गैस अर विशेष प्रकार रौ तेल मिल्यौ है। अबार प्रयोग चाल रैयो है। व्यापारिक स्तर पर उत्पादन सरू हुवै लागै लौ, जणां राजस्थान रौ कितणौ मान-सम्मान बधै लो, आ आज कल्पना री ई बात है।

राजस्थान की रेत तो और भी गजब करै लागी है। अढै कोयला कोनी अर पाणी री भी कमी है। पण इब राजस्थान रा रेत रा समन्दर में मोकळी बिजली पैदा हुवैली। आ बिजली विकराल रेतीली आंधियां रै प्रचंड वेग नै काबू में कर र प्राप्त करी जावैली। हैनी अजूबो? जयसलमेर शहर रै इर्द गिर्द री पहाड़ियां माथे पवन उर्जा इकाइयां बैठायी जा चुकी है। म्हानै मिली सूचनानुसार तीस मेघावाट बिजली रौ उत्पादन अेक साल पैली सरू होयगौ हौ अर उत्साहित लोग पवन ऊर्जा इकाइयां स्थापित कर्यां जा रैया हा। तब बतायौ गयौ हो के आवंता अेक बरस में ढाई सौ और दो बरस में पांच सौ मेघावाट बिजली रौ उत्पादन हुवै लागैलो! ई क्षेत्र में स्थापित पवन चक्कियां अर इण माथै बिजली री सजावट रात्रि बेला में मन मोहक नजारौ दिखावै लागी है। पैली तेल और अब पवन चक्कियां सूं बिजली रौ उत्पादन, के आपनै कोनी लागै के पुराणौ राजपूतानी अतीत रौ इतिहास बण चुक्यौ है अर नुवौ राजस्थान विकास तथा समृद्धि रै मार्ग पर तेजी सूं दौड़ लगा रैयो है।

विकास यात्रा कौ अेक और मोड़। खबर मिली है के थार रै मरूथल में पीळौ सोनू उगायौ जावैलो। यो पीळौ सोनू है-जोजोबा नांवरौ झाड़ीनुमा पौधो। यो तेलबीजां कौ पौधो दो मीटर तक ऊंचौ हुवै अर इण रै बीजां सूं ५०-५५ प्रतिशत तक तेल मिलै। ओ तेल व्हैल मछली रै तेल रौ विकल्प बतायौ गयौ है। कैयो जावै है के सौंदर्य प्रसाधनां में ई तेल रौ उपयोग हुवै अर सुपर सोनिक हाई सोनिक अर हाई टेम्पर विमानां मै इण तेल रौ उपयोग लुब्रिकेंट रै रूप में कर्यौ जावै। महत्वपूर्ण तथ्य ओ भी है के अन्तर्राष्ट्रीय बाजरा में इण तेल की कीमत प्रति लीटर सात हजार रूपयां सूं भी बेसी बतायी जावै है। यानी अब दुनियां को सौ सूं मैगो तेल बीज राजस्थान की धरती में पैदा हुवैलो। इण रै सामी सरसूं मूंगफली, तिल सोया अर सन् फ्लावर का उत्पादक क्षेत्र पाणी भरैला। मरू अनुसंधान शुष्क केन्द्र काजरी रै वैज्ञानिक डा. रामासिंह मे इतिया रै हवालै सूं यो शुभ समाचार म्हारै ताईं पूग्यौ है।

राजस्थानियां खातर अेक और शुभ समाचार। जैटरोफा की राजस्थान में अरंड नांव सूं पिचाण है। ओ काळौ अर सफेद रंग कौ बीज हुवै। इण नै रतन जोत अर चंद्रजोत ई कैयो जावै। इण रौ तेल डीजल रै रूप में काम आवै इण नै डिजल कौ विकल्प बतरयौ जावै है अर बायोडिजल रै रूप में इण नै मान्यता मिलगी है। इण कौ उत्पादन बंजर अर रेतीली जमीन माथै हो सकै अर पाणी री जरूरत ई भोत कम। यानी जैट रोफा रै उत्पादन खातर राजस्थान री धरती अधिक उपयुक्त है। यानी डिजलरा टैकरा भरणै की तैयारी कर लेणी चाये। इसी स्थिति में प्रवासियां रौ मन ई ललचा सकै है वै फेरूं राजस्थान जावै अर ठै ई बस जावै।

+++ ○○ +++

फासला

*** उषा सराफ, कोलकाता**

सतरंगे आकाश का मायाजाल
सत्य है, मरीचिका है, या कोई भ्रमजाल
हसरतों और ख्वाबों के पर लगाये परिन्दे
उड़ते जाते हैं
लम्बी यात्रा है, फिक्र नहीं
आगे बढ़ते जाते हैं
चाहे जितनी बाकी हो जान
होती नहीं थकान।
बस थोड़ी सी और उड़ान
फिर मिलेगा आसमान
तत्पर हो जाता है मन दूरी को
स्वीकारने
सजते ही जाते हैं
टूटते नहीं, बिखरते नहीं सपने
सागर में जैसे उठती रहती है लहरें
अरमानों को वैसी आंच देती मन की
हिलोरें
चाहे कितना ही घिरे अंधकार
कहीं न कहीं रहती उसमें आस
फिर से भर देती उजास
सोचती हूं
धरती से आकाश तक का ये
फासला न होता
तो ख्वाबों का कारवाँ कहाँ होता?

मैं तुम्हारी हूं

अधिकार ने जगत से कहा- 'तुम मेरे हो!'

जगत ने उसे बांध कर सिंघासन पर डाल दिया।

प्रीति ने जगत से कहा- 'मैं तुम्हारी हूं। जगत ने पराजित होकर अपने घर शासन उसे दे दिया।

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर

एक सोवणी लड़की बस स्टैंड पर खड़ी थी। अेक नोजवान कनै आ'र बोल्यो, चांद तो रात में निकळै आज दिन में कैयां निकल्यो। लड़की बोली, उल्लू रात में बोलै आज दिन में कैयां बोल्यो।

संवेदनशीलता का सिमटता दायरा

✍ सत्यनारायण सिंहानिया
अध्यक्ष, अ.भा./मारवाड़ी सम्मेलन, शाखा- कानपुर

संवेदना ऐसा प्राकृतिक गुण है जिसकी इन्सान में प्रचुरता पायी जाती है। मेरा कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि इन्सान के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य प्राणियों में इसका पूर्णतया अभाव है। जीव जन्तु, पेड़, पौधे तथा अन्य सृष्टि निर्मित पदार्थों में भी इस गुण की विद्यमानता है किन्तु संवेदना के प्रति आकृष्टता तथा अभिव्यक्ति मात्र मानव में ही उपलब्ध है। हम गत दशक से अनुभव कर रहे हैं कि मनुष्य के इस प्राकृतिक गुण का दायरा शनैः शनैः सिमट रहा है। पारिवारिक क्षेत्र हो अथवा सामाजिक या राष्ट्रीय मनुष्य संवेदनशीलता से पलायन करता सा प्रतीत हो रहा है।

पारिवारिक क्षेत्र की ओर जब हम नजर दौड़ाते हैं तो यह अनुभव होता है कि आज हम एकल परिवार की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। संयुक्त परिवार आज अपवाद स्वरूप है और जो आज भी संयुक्त परिवार की दुहाई दे रहे हैं, उनके यहां भी विभाजन की अव्यक्त एवं अदर्शनीय दीवार है। इसकी गहराई में जाने पर हम स्पष्ट रूप से जान सकते हैं कि हम संवेदनहीन बन रहे हैं। हमें परिवार के अतिरिक्त कुछ अच्छा नहीं प्रतीत होता है, अपने वृद्ध परिवारजनों के सुख-दुख व उनके कार्यों में भागीदारी हम उत्साह एवं उत्तरदायित्व से न निर्वहन कर मात्र औपचारिकता पूरी कर रहे हैं और सच पूछिए तो यही हाल हमारी सन्तानों का भी है। जिन सन्तानों के प्रति हम प्रेम रूपी मोहपाश में बंधे है वे भी बुझे मन से हमारे कार्यों में हाथ बटाते हैं, यद्यपि इसके पीछे हमारा तर्क होता है कि उच्च शिक्षा एवं उन्नत भविष्य के प्रति हमारी सन्तानें गंभीर है, इसलिए उनके दैनिक कार्यकलापों पर अंकुश न रखकर स्वच्छन्दता ही उचित है किन्तु वास्तविकता यह है कि कुछ अपवादों को छोड़कर पारिवारिक रूप से हम सभी संवेदनशून्य बन चुके हैं। पारिवारिक विपत्तियों में औपचारिकता का निर्वहन हृदयहीनता का ही स्वरूप है और आज हम इसी मार्ग पर चल रहे हैं।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय क्षितिज में भी लगभग यही परिस्थिति दृष्टिगोचर होती है। समाज के प्रति हमारी जागरूकता, कर्त्तव्यबोध व सहयोगी प्रवृत्ति कहीं खो सी गई है। समाज के सुखों व मनोरंजक आयोजनों में हमारी ललक पराकाष्ठा पर होती है क्योंकि हम आत्मरंजन के लिए तत्पर है और सुखद क्षणों में यह प्रचुरता से उपलब्ध है किन्तु समाज के परिवारों में विपत्ति या दुख आने पर या उसके यहां कार्य का भार पड़ने पर हम मात्र औपचारिकता का पालन कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते है। हम न तो उनके कार्यों में सच्चे सहायक बनते हैं और न विपत्ति में सही अर्थों में ढांढस दे पाते हैं। इन सबके पीछे हमारी संवेदनहीनता ही तो है और क्या है?

राष्ट्र के प्रति भी हमारा उत्तरदायित्व नगण्य सा होता जा रहा है। आर्थिक संसाधनों की आपूर्ति व राष्ट्रीय विकास के प्रति हमारी जिम्मेदारी, उचित रूप से कर अदायगी, सरकारी नियमों के पालन व सच्चे शहरी के रूप में बनती है। इस दिशा में भी हम निजी स्वार्थ पूर्ति का ही अवसर तलाशते हैं। हम स्वार्थपूर्ति हेतु अनैतिक व अवैधानिक तरीकों से उसका दोहन करने में नहीं चूकते हैं। आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय सम्पत्तियों के साथ-साथ निजी सम्पत्तियों को नुकसान पहुंचाकर हम अपना ही नुकसान कर रहे हैं। सार्वजनिक स्वच्छ स्थानों व स्वच्छ भवनों को कूड़ेदानों के रूप में प्रयोग करना हमारी मानसिकता बन चुकी है। स्वार्थवश हम लालफीताशाही के प्रभाव में उनकी जेबें भरकर राष्ट्रीय आय को क्षति पहुंचा रहे है और इस प्रकार राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति दोनों पक्ष पथभ्रष्टता व संवेदनहीनता का खुला परिचय देते हुए अट्टहास करते हैं।

उक्त संवेदनशून्यता हमरे अर्न्तपट में नासूर का रूप धारण करती जा रही है और आने वाली पीढ़ियां भी इन्हीं संस्कारजनित कार्यकलापों का अनायास ही शिकार बनती जा रही है। यदि हम नहीं सुधरे और अपनी अन्तरात्मा को नहीं झकझोरा तो एक दिन ऐसा आएगा कि हम पूर्णतया संवेदनहीन हो जाएंगे और फिर हम इन्सान से अपदस्थ होकर पशुवत श्रेणी की ओर अग्रसर हो जाएंगे और तब वापस सही दिशा एवं मार्ग का ज्ञान प्राप्त कर लक्ष्य की ओर लौटना अत्यंत दुरूह हो जाएगा। आइए ! आज और अभी से अपनी मानवीय संवेदना को जागृत कर सच्चे मानव कहलाने योग्य बनें।

+++ ○○ +++

जैसे भी चले...

मध्यम-मध्यम हवा चली, और हवा के संग सारे ही चले।
ऐसे चले कुछ वैसे चले, जैसे भी चले सारे ही चले।।
खोना भी यहां, पाना भी यहां, करना सब कुछ ही यहीं,
रोना भी यहां, हंसना भी यहां, सहना सब कुछ ही यहीं।
मन भर के चले, कुछ आंसू पीकर ही चले, जैसे भी चले सारे ही चले।।
कोई अपना बने कोई दूर रहे, कोई चाह के भी मजबूर रहे,
कुछ कह न सके, कुछ सह न सके, कोई पास भी आकर दूर रहे।
कोई दूर चले, कोई दूर से चले, जैसे भी चले सारे ही चले।।
मुंह मोड़ के गये, दिल तोड़ के गये, सब जान के भी छोड़ गये,
कोई पास भी आये, थोड़ी आस बंधाये, अपना बना के मेरे ही हो गये।
कोई तोड़के चले, कोई जोड़ते चले, जैसे भी चले, सारे ही चले।
ऐसे चले, कुछ वैसे चले, जैसे भी चले सारे ही चले।।

*** संदीप जैन, वीरपुर (सुपौल)**

इंटरनेट पर मोहबत, झगड़ै अ'र तलाक री सुविधा

आजकल इंटरनेट रो रोळो घणो करड़ो चाल रैयो है। रोज अखबारां माथै नूंआ-नूंआ पैका आवे। कदै इंटरनेट पर आ चीज कदै इंटरनेट पर बा चीज। घर रै सामान सूं ले कर मुर्दे री कफन-काठी तांई इंटरनेट पर खरीदो।

इंटरनेट पर पणिज-ब्यौपार तो जाणी हूं रैयो ही है। अब सगाई ब्याह भी इंटरनेट माथै हुवैला। बड़ै-बड़ै सैरां में जियां सगाई-ब्याह करवाणियां दलाल आप-आप रै दफ्तरां रा ठिकाण भींता माथै मांड़ियोड़ा राखै-रिश्तां के लिए मिलें-फलां-फलां जगह। अै बस बीती बातां हू जावैली। अै लोग ठीक ऊंयाई फैल हुवैला जियां ठूंगा बणाणिया पोलिथिन री थैली अणै सूं फैल हुआ। अखबारां माथै ब्या-शादी रा विज्ञापन जरूर आ सकै, पण ''नंबर वन'' तो.. इंटरनेट रो ही रैहसी सा।

ओ जमानो इंटरनेट रो है। अब ब्याव जोग कन्या या महिला, वर या अदखड़ री सारी जाणकारी सीधी इंटरनेट पर मिलै ली। लोग कैवे कै एक टाइम घर-घर में इंटरनेट रो 'कनेक्शन' हो जावे लो। इण सूं फून पर रसभरी प्यार री बतळावण करणिया नै सस्तो साधन मिल जावै ला। सो अब लैला-मजनू अ'र रामू-चनणा नै घर हाळा सूं ओलै-छानै बात करणै रो 'टेनशन' नीं उठावणो पड़ैला। क्यूं कै इंटरनेट पर बोलणै री जरूरत ही नीं पड़ैला। बस चुप-चुप बटण दबाओ अर काम हुवग्यो। अब फून पर आ खेणै री दरकार नीं पड़ै कै- ''रख दे मम्मी आवै।'' इंटरनेट पर फीडिंग करतां थकां जे मम्मी आ भी जावै तो बालिका नै घबराणै री जरूरत कोनी। क्यूं कै एक ही बटन सूं सारो परदो साफ भी र सकै। मम्मीजी गर पूछ भी लेवै- छोरी कांई करै ? सीधो सो जवाब ओ सवाल हल करूं।

कहावत है कै रात नै पूरी दुनिया सोवै पण जोगी (अ'र प्रेमी) जागै। सो जद मम्मी-डेडी रात रै बखत सूता हुवैला-प्रेमीजन उठ-उठ नै कंपूटर पर हथाई करैला। डेटिंग सूं लेकर शिकवा-शिकायत तांई इंटरनेट पर हू जाया करै ला। इण सुविधा खातर कोई कोई मम्मी अथवा डैडी भी रात्यूं जागै ला। इण बाट माथै के कद अै टींगर-टींगरी सोवै अर कद म्हूं म्हारली नै संदेश फीडूं।

बड़ो अजीब निजारो हुया करै लो इंटरनेट रो। अफसर जी दफ्तर में बैठ्या बिराजै। सोचै कै टाइपिस्ट नै किण टेम साथै ले जावणी ठीक रैहसी। घड़ी देखै। ओ ! पैल्यां घर री खबर तो लेवां। कठी बी रो कोई संदेसो तो नीं आ रैयो है इंटरनेटर पर अफसर जी इंटरनेट माथै घूम नै घरै रा बटन खट खटावै। संदेस आवै कै ''म्हैं म्हारी सहेली खनै जाऊं, ८ बज्यां आऊंली।'' अफसर जी चक्कर खायग्या। बेइमान रै कीं बुधी घणी चालै। अचाणचक आ भायली कठै सूं आय टपकी।

अफसर जी घर रै सेट री ताजा स्थिति जाण नै री जुगत लगावै। कई बटण दबावे। परदै पर देखै तो ईयी लागै जाणै

● श्याम जांगिड़

कोई 'साइबर' आपणो घर रै कंपूटर पर लाग रैयो हुवै। कोई प्रेम पत्र लिख्यो जारयो हैं सांस रोक नै बै सारा आखर बांचै। आखर-लगोलग बढ़ता जावै है। हे भगवान ! ओ कांई कबाड़ो हू गयो।

थोड़ी ताळ रुक नै बे पेजर पर आपरा नंबर भिजवावै। फोन आवै। अफसर जी उठाता पाण बकणनै लागै- ''म्हानै ठा कोनी हो कै तू इतरी बड़ी गधी है''

''बेवकूफ तू बोल कुण रियो है''

''म्हैंथारो भरतार''

''थे अंया-कंया बोल्या म्हानै हंई''

''इंटरनेट पर किण नै कागद लिखै ही''

''थानै''

''म्हानै ! क्यूं ?''

''कालेज रो नोलेज अब कोनी चालै। इब तूं ब्याहता है। लखण सीख। अ'र इण समाचार नै साफ मती करीजै। म्हैं इण रा नंबर देखणो चा...

अफसर जी इंटरनेट माथै नं. देख्या। नं. दफ्तर रा ही मिल्या। दफ्तर रा नंबरां बिच बै दफ्तर में बैठ्या देखता भी कीयां। कीं भी हो बा रो बहम निसर गयो। नीतर दोनूआं रो घर उजड़नै री त्यारी हुय ज्याती।

लोग खेवै इंटरनेट टेलीफून सूं सस्तो पड़ैला। सो झगड़ालू टाइप लुगायां नै ओ एक ससतो साधन उपलब्ध हू जासी। अब बै आराम सूं घर बैठी आप रै धणी रोमाथो बमचक अ'र आपरो माथो सीतल करवा लेसी। गिरस्त रै गाडै री कचर-पचर इंटरनेट माथै सस्तै में सुलट जासी। गिरस्त रै 'आसव' में एक ओ 'सत' भी जरूर हुवै। कइ घरां में इण 'सत' री मोकळात रैवै। पैली रै टेम तो अै वीरांगना आप री सासू, जेठाणी सूं मालामार नै आप री वीरता रो दिखावो कर लेवंती। पण आज रै जमानै में घणखरी वीरांगना आप रै मोटियार साथै अलगी रैवै। सो जद भी उण में छांया आवै या वीर चढ़ै (हरियाणे में तो लुगाई नै बीर ही बोलै) बै सीधी बार आप रै भरतार पर ही करै। सो इंटरनेट री सुविधा सूं झगड़ै री टेम दोनू मिनखा रै मुंह में झाग नीं आवै अ'र बिना तीसरै नै सुणै लड़ाई संपूरण भी हू जावैं म्हानै इंटरनेट रो ओ एक घणों महतावू उपयोग निजर आयों। रोळो भी कोनी माचै अ'र आप री नसां भी ढीली कर लेवै।

पण अठै बीच-बचाव करणिया री कोनी चालै ली। चाहे इंटरनेट पर किस्यो ही उण्डो लफड़ो हू गयो हुवै, पड़ौसण नै खबर नीं लागै ली। इण सूं काना-बाती हाळी लुगायां री तबीयत पर बुरो असर हुवणें रो डर रैह सी। हां, आ अलगी बात है कै कोई समाजसेविका आप री मेंबर भैणजियां नै-इंटरनेट सूं जरूर खबर पुगा नै-चख-चख करवा सकै। फेरूं भी तकरार रो फैलाव रोळै सूं हुवै अ'र इंटरनेट पर रोळै री कोई गुंजाइश कोनी।

सो आगलै समय में कोई पड़ौसी ओ निजारो भी देख सकै, कै पासै रैवण हाळी भैणजी सामान बांध नै बहीर हुय रैयी है।

''कांई भैणजी पीरै जावो हो''

''नीं सा, अब कांई पीरो कांई सासरो'' आंख्या में आसूं टपकाया''-... म्है आनै छोड़ दिया- तलाक लेली''

''अरे रामजी, ओ कांई करयो थे''

''कद?''

''अबी दोपारां इंटरनेट पर''

''अ'र तलाक''

''बा भी इंटरनेट पर लेली-देदी''

ऊंहूं.... ओल्यो चाबी, बानै दे दिज्यो''

दिन छिपतै री बखत भैणजी पूठा आयग्या।

''कांई डावड़ा, थे तो पूठी आयगी''

''क्यूं थारै मिर्च लागगी''

मिर्च लागै थारै। म्हैं तो पूछै ही कांई भूलग्या''

''म्हारो भाई इंटरनेट पर सुलह करवा दीनी'' भैणजी मुळकी।●

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता - ७, फोन : २२६८-०३१९

१ नवंबर २००४

प्रिय महोदय

७०वां स्थापना दिवस विशेषांक - २५ दिसंबर २००४

मारवाड़ी समाज की एकमात्र सर्वभारतीय प्रतिनिधि संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस के अवसर पर समाज विकास का एक सग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा।

यह आयोजन ''कला मंदिर- सभागार'' में अनुष्ठित होगा। कार्यक्रम की सूचना समयानुसार दी जाएगी।

समाज विकास के इस विशेषांक में आपके विज्ञापन सहयोग हेतु अनुरोध एवं प्रार्थना है।

आदर सहित,

विनीत

मोहनलाल तुलस्यान
अध्यक्ष

भानीराम सुरेका
महामंत्री

विज्ञापन दर

	(रंगीन)	(साधारण)
अंतिम कवर पृष्ठ	२५,०००	२०,०००
द्वितीय कवर पृष्ठ	२०,०००	१५,०००
तृतीय कवर पृष्ठ	२०,०००	१५,०००
स्पेशलभीतरी पृष्ठ	१५,०००	१२,५००
पूरा पृष्ठ	१२,५००	१०,०००
आधा पृष्ठ	७,०००	५,०००
चौथाई पृष्ठ	३,५००	२,५००
पृष्ठ के शेष में एक लाइन	२,५००	२,०००

यांत्रिक विवरण

पृष्ठ का कुल परिमाप	२७ × १९ से. मी.	पृष्ठीय कालम ३
मुद्रण क्षेत्र	२२ × १६ से. मी.	प्रत्येक कॉलम का परिमाप २२ × ५ सेमी.

५० हजार से अधिक सर्वभारतीय पाठक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी समिति की बैठक के निर्णय

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक २५ सितम्बर २००४ को सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका की अनुपस्थिति में संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़ कर सुनाई जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई।

श्री पोद्दार ने २२ अगस्त २००४ को राउरकेला में आयोजित अखिल भारतीय समिति की बैठक की रपट प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

सम्मेलन के संविधान की धारा ९ (५) (घ) के अनुसार कोलकाता से अखिल भारतीय समिति २००४-०६ के लिए २१ सदस्यों के मनोनयन पर विचार-विमर्श के उपरांत श्री रामदयालजी मस्करा के प्रस्ताव एवं श्री बंशीलालजी बाहेती के समर्थन पर मनोनयन का दायित्व सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान को दिया गया।

उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अक्टूबर माह में एक आत्म चिंतन गोष्ठी, नवम्बर माह में चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा पुरस्कार समारोह, २५ दिसम्बर को परम्परागत स्थापना दिवस समारोह तथा दिसम्बर या नये वर्ष के प्रारम्भ में विभिन्न राष्ट्रों के कलकत्ता में रह रहे मारवाड़ी समाज के कॉन्सल जनरल के स्वागत की योजना है।

सर्वसम्मति से तय किया गया कि आत्म चिंतन गोष्ठी का आयोजन दो दिवसीय रखा जाए एवं सभी प्रांतों में सदस्यों एवं पदाधिकारियों को बुलाए जाए तथा विशिष्ट व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाए।

भावी कार्यक्रम एवं संगठन पर सर्वश्री इंद्रचंद संचेती, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, रतन शाह, ओंकारमल अग्रवाल, बंशीलाल बाहेती, रामदयाल मस्करा, गोपाल अग्रवाल, अरुण गुप्ता ने महत्वपूर्ण सुझाव रखे, जिनमें फण्ड निर्माण, समाज में जागरुकता लाना, सामूहिक प्रीति सम्मेलन व प्रीति भोज, अखिल भारतवर्षीय स्तर पर स्थापना दिवस समारोह का आयोजन, आजीवन सदस्यों की संख्या में वृद्धि, संगठन को ठोस बनाने हेतु १५-२० व्यक्तियों की एक टीम बनाने, मारवाड़ी रत्न समारोह आयोजित करने, वैवाहिक समस्या के समाधान हेतु कम्प्यूटर में लड़के-लड़कियों के नाम आदि विवरण सहित डायरेक्टरी, समाज की तथा अप्रवासी भारतीयों की पूर्ण विवरण सहित डायरेक्टरी, समाज विकास पत्रिका के जरिए अप्रवासी भारतीयों से तथा ईमेल से जुड़ना एवं एक प्रतीक बनाना आदि प्रमुख थे।

सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा सदस्यों को तमिलनाडु में प्रांतीय शाखा के गठन की जानकारी देते हुए सदस्यों से सक्रिय रूप से सम्मेलन से जुड़ने का आह्वान किया।

अखिल भारतीय समिति के कलकत्ता से नये सदस्य

उपर्युक्त लिखित निर्णय के अनुसार सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अ.भा. समिति के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों को चुने जाने की घोषणा की-

सर्वश्री अरुण गुप्ता
गीतेश शर्मा
जयगोविन्द इन्दोरिया
नारायण प्रदास सरावगी
नरेन्द्र कुमार तुलस्यान
ओम प्रकाश पोद्दार
जगदीश प्रसाद बेड़ीया
प्रेमचन्द सुरेलिया
राज कुमार बोथरा
सूर्यकरण सारस्वा
डुंगरमल सुरेका
गिरधारी लाल जगतरामका
राजाराम शर्मा
ओमप्रकाश अग्रवाल
पी.आर. लाटा
किशनलाल महिपाल
रवीन्द्र लड़िया
शम्भु चौधरी
मुरारीलाल ढांढनिया
रामचन्द्र बड़ोपोलिया
डा. विनोद कुमार रुंगटा

प्रो. लोढ़ा के जन्मदिन पर बधाई

प्रख्यात साहित्यकार व शिक्षाविद प्रो. कल्याणमल लोढ़ा के ८४वें जन्मदिन पर अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा उन्हें पुष्पहार व बधाई दी गई। बाईं ओर से सर्वश्री उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल विष्णूकान्त शास्त्री, भानीराम सुरेका, सीताराम शर्मा, प्रो. लोढ़ा एवं राम अवतार पोद्दार।

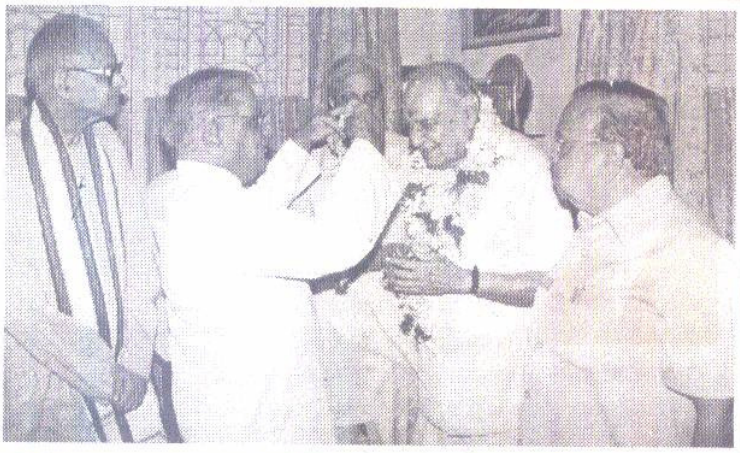

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

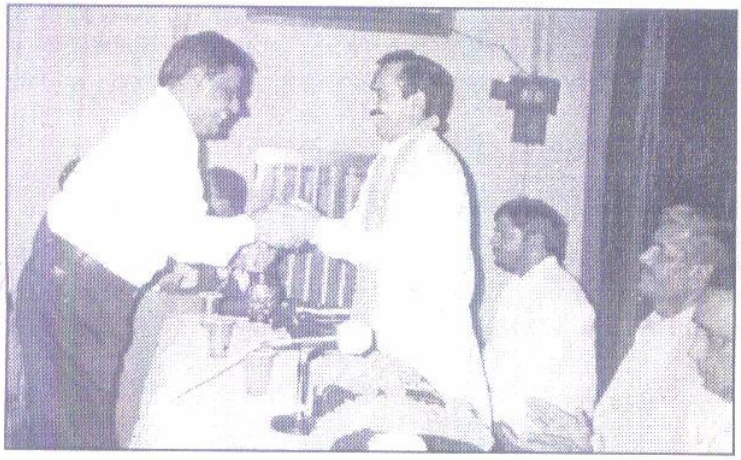

बायें से- माइक पर मदन राठौड़- एमएलए सुमेरपुर, दाताराम गुज्जर- एमएलए खेतड़ी, सुभाष चन्द्र शर्मा- एमएलए कोंटपुतली, मोहम्मद माहिर आजाद- एमएलए भरतपुर, खुशवीर सिंह- एमएलए खारची, सम्मेलन अध्यक्ष देवकी नन्दन जालान एवं उद्योगपति महाबीर प्रसादजी जैन।

उद्योगपति बुद्धमलजी बैद द्वारा श्री मदन राठौड़ विधायक सुमेरपुर को माल्य-अर्पण करते हुए।

सिलचर : राजस्थान विधानसभा के विधायक दल का भव्य स्वागत

राजस्थान से भरतपुर के कांग्रेस विधायक मोहम्मद माहिर आजाद के नेतृत्व में राजस्थान विधानसभा की उच्चस्तरीय प्रश्न एवं संदर्भ समिति के दल के १२.९.२००४ को सिलचर आगमन पर सम्मेलन की सिलचर शाखा द्वारा उनका भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सिलचर के विशिष्ट नागरिक, समाजसेवी, उद्योगपति तथा बड़ी संख्यामें व्यवसायीगण उपस्थित थे। सभी विधायकों ने हर राजस्थानी भाइयों को राजस्थान में व्यवसाय लगाने में तथा अन्य सहायता का आश्वासन दिया एवं कहा कि विश्व के हर कोने में बसे मारवाड़ियों ने राजस्थान का मस्तक ऊंचा किया है।

सभा का संचालन सम्मेलन सचिव गोविन्द प्रसाद मूंदड़ा ने किया तथा सम्मेलन अध्यक्ष देवकी नन्दन जालान ने सभी अतिथिगण का आभार व्यक्त किया जिन्होंने यहां पधार कर सिलचर वासियों का मान बढ़ाया।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

गोपाल अग्रवाल

कोलकाता : चुनाव में निर्वाचित अन्य पदाधिकारीगण

विश्वनाथ भुवालका कोषाध्यक्ष

३१ जुलाई २००४ को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का चुनाव कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार उनके विशेष चुनाव अधिकारी विद्युत बनर्जी व अधिवक्ता सरोज तुलस्यान की देखरेख में सम्पन्न हुआ था एवं उनके द्वारा पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की गई थी जिसे समाज-विकास के अगस्त अंक में प्रकाशित किया गया था। जो नाम अप्रकाशित रह गए थे वे हैं- सर्वश्री विश्वनाथ भुवालका, कोषाध्यक्ष, गोपी धुवालिया और पूरनमल तुलस्यान, संयुक्त सचिव।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पदाधिकारियों का दौरा एवं शाखाओं का नवगठन

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल के दिशा-निर्देशन पर प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री रामजी भरतिया, प्रांतीय संगठन संयोजक श्री जयदेव प्रसाद नेमानी, श्री अनन्तराम तुलस्यान तथा अन्य पदाधिकारीगण ने दिनांक २१.८.०४ से २४.८.०४ सारण प्रमंडल की छः शाखाओं, विरौली, सिधवालिया, मीरगंज, गोपालगंज, सिवान एवं छपरा का दौरा किया गया।

विरौली शाखा

२१.८.०४ को विरौली शाखा की बैठक श्री मदन लाल तुलस्यान की अध्यक्षता में हुई, शाखा का चुनाव कराया गया तथा निम्न पदाधिकारियों चुने गए :-

श्री दिनेश प्रसाद रुंगटा- अध्यक्ष, श्री विनोद कुमार तुलस्यान- उपाध्यक्ष, श्री मुकेश कुमार तुलस्यान- मंत्री, श्री कृष्ण मुरारी खेतान- संयुक्त मंत्री, श्री मुरारी प्रसाद रुंगटा- कोषाध्यक्ष, श्री जगदीश प्रसाद रुंगटा- प्रा. समिति सदस्य तथा सर्वश्री राधेश्याम रुंगटा, प्रमोद कुमार रुंगटा, पवन कुमार खेतान, भगवान अग्रवाल, शंकरलाल खेतान, गोविन्द प्रसाद रुंगटा, मदन लाल तुलस्यान कार्यकारिणी समिति सदस्य चुने गए।

सिधवालिया शाखा

२१.८.०४ को श्री विष्णु कुमार सुरेका की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया-

श्री विष्णु कुमार सुरेका- अध्यक्ष, श्री राधेश्याम रुंगटा- उपाध्यक्ष, श्री अनिल कुमार केजड़ीवाल- मंत्री, श्री महेश कुमार अग्रवाल सं. मंत्री, श्री संजय कुमार टिबड़ेवाल- कोषाध्यक्ष, श्री प्रदीप कुमार- मंत्री प्रा. स. स. तथा सर्वश्री ओम प्रकाश अग्रवाल, सुरेश कुमार अग्रवाल, मुरारी लाल खेतान, हरि प्रसाद अग्रवाल, अरुण कुमार खेतान, रामौतार काबरा, सुरेश कुमार मंत्री, राम स्वरूप खंडेलवाल, शशि कुमार केडिया, दीपक कुमार रुंगटा कार्यकारिणी समिति सदस्य चुने गए।

मीरगंज शाखा

२२.८.०४ श्री ओम प्रकाश अग्रवाल की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया। श्री ओमप्रकाश अग्रवाल-अध्यक्ष, श्री नन्दकिशोर पोद्दार- एवं श्री प्रदीप कुमार केडिया- उपाध्यक्ष, श्री मुरारी लाल पोद्दार- मंत्री, श्री संजय कुमार सरावगी एवं श्री सुशील कुमार सरावगी- सं. मंत्री, श्री तोलाराम सरावगी- प्राप्त. सदस्य तथा सर्वश्री कमल कुमार पोद्दार, पंकज कुमार अग्रवाल, विकाश कुमार अग्रवाल, बनवारीलाल पोद्दार, प्रमोद कुमार पोद्दार, अनिल कुमार पोद्दार, अशोक कुमार पोद्दार, सुनील कुमार पोद्दार कार्यकारिणी समिति सदस्य चुने गए।

गोपालगंज शाखा

दिनांक २२.८.०४ को श्री बजरंग लाल केडिया की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई। निम्नरूपेण चुनाव हुआ-

श्री मजन कुमार डालमिया- अध्यक्ष, श्री प्रेम कुमार केडिया एवं श्री राम गोपाल शर्मा- उपाध्यक्ष, श्री अजय कुमार केडिया- मंत्री, श्री मनोज कुमार अग्रवाल एवं श्री ब्रजेश कुमार शर्मा- सं. मंत्री, श्री वृजलाल केडिया- प्रा. स. सदस्य एवं सर्वश्री चन्दुलाल भावसिंहका, निरज कुमार केडिया, संजय कुमार केडिया, सुरेन्द्र कुमार टेकड़ीवाल, कृष्ण कुमार तुलस्यान, भगवती कुमार

भावसिंहका, विनोद कुमार शर्मा कार्यकारिणी सदस्य चुने गये।

सीवान शाखा

२३.८.०४ को श्री जगदीश प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई, सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया-

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा- अध्यक्ष, श्री गोवर्द्धन शर्मा एवं श्री बनवारी लाल अग्रवाल- उपाध्यक्ष, श्री प्रमोद डोकानिया- मंत्री, श्री सुशील कुमार झुनझुनवाला- सं. मंत्री, श्री हनुमान प्रसाद लाड़िया- कोषाध्यक्ष, श्री विनोद कुमार कांरूडिया- प्रा. स. सदस्य तथा सर्वश्री सूरज सोमानी, राधेश्याम चौधरी, श्याम सुन्दर नांगलिया, जयप्रकाश खेतान, प्रभात कुमार बजाज, कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, अनूप कुमार चौधरी, दिलीप अग्रवाल, नन्दलाल खदरिया, अरुण कु. जगनानी, गिरधारी लाल सरैया, पवन कुमार बजाज कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

छपरा शाखा

२४.८.०४ को श्री श्याम लाल चौधरी की अध्यक्षता में छपरा शाखा की बैठक हुई, निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये-

श्री गोरी शंकर पोद्दार- अध्यक्ष, श्री मदन लाल महेश्वरी एवं श्री मोहनलाल चांदगोठिया- उपाध्यक्ष, श्री पवन कुमार चांदगोठिया- मंत्री, श्री प्रमोद कुमार भरतिया एवं श्री श्याम बिहारी अग्रवाल- सं. मंत्री, श्री मातादीन सोनी- कोषाध्यक्ष, श्री विजय कुमार चौधरी- प्रा. स. सदस्य एवं सर्वश्री शिव कुमार भरतिया, प्रसाद जगाती, श्याम सुन्दर गोयनका, संतोष कुमार केडिया, श्याम लाल चौधरी, सत्यनारायण शर्मा, ओम प्रकाश अग्रवाल, पवन कुमार खेतान, ज्ञान वर्धन पोद्दार, राम भगत चांदगोठिया कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति
पटना : कार्यकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न

१३.०६.२००४ को बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति की कार्यकारिणी समिति की बैठक अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री चौधरी ने उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए बताया कि शिक्षा समिति के सत्र २००४-२००६ में कार्यकारिणी समिति की पहली बैठक है। सत्र २००४-२००७ के नये न्यासियों का चयन करना है। पारिवारिक आजीवन सदस्य एवं आजीवन सदस्यता शुल्क घटाने पर तथा सदस्य बनाने पर विचार करना है।

गत बैठक की कार्यवाही सर्मसम्मति से सम्पुष्ट की गई। महासचिव श्री प्रह्लाद राय शर्मा ने अपने प्रतिवेदन में बताया कि वर्तमान में शिक्षा समिति द्वारा सी.ए., बी.ए., बी.एस.सी., आई.काम., आई.एस.सी. के २५ छात्र-छात्राओं के बीच २००००/- की मासिक छात्रवृत्ति दी जा रही है एवं कार्यालय के मद में मासिक ५००/- रु. खर्च है। पोषक सदस्यों की संख्या कम एवं प्रत्यावर्तन की राशि नहीं आने से आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा समिति के विकास एवं कोष वृद्धि के लिए सामूहिक प्रयास किया जाय ताकि मेधावी छात्र-छात्राओं को समय पर आर्थिक सहयोग दिया जा सके।

निम्न न्यासियों का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ- १. श्री नन्द लाल रूंगटा, चाइबासा २. श्री हरिकृष्ण अग्रवाल, पटना ३. श्री सीताराम छापड़िया, पटना ४. श्री आर.एस. अग्रवाल, पटना।

वर्तमान में बैंक ब्याज की दरों में कमी के कारण समिति को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा रहा है। अत: कोष संवर्द्धन समिति के संयोजक व प्रबन्ध न्यासी श्री सीताराम छापड़िया ने समिति के सदस्यों से अनुरोध किया है कि वे अपने जीवन काल तक ५०,०००/- या १,००,०००/- रुपये अपने पास फिक्स कर दें जिसकी ब्याज की राशि शिक्षा समिति में पोषक सदस्य के रूप में मासिक दें ताकि समाज के मेधावी छात्र/छात्राओं को आर्थिक सहयोग दिया जा सके। आपने बताया कि शिक्षा समिति के संरक्षक मंडल सदस्य श्री विजय कुमार बुधिया पटना ने एक लाख रुपये के फिक्स डिपोजिट पर प्राप्त ब्याज की राशि ४५०/- रुपया मासिक सितम्बर २००४ से देना शुरू कर दिया है। श्री सीताराम छापड़िया को सर्वसम्मति से प्रबन्ध न्यासी बनाया गया।

शिक्षा समिति की परिवार आजीवन सदस्यता शुल्क ११००१/- रु. से घटाकर ५१०१/- रु. तथा आजीवन सदस्यता शुल्क ५१०१/- रु. से घटाकर २५०१/- रु. करने का निर्णय लिया गया। शिक्षा समिति को दिया अनुदान इनकमटैक्स की धारा ८० जी के अन्तर्गत है।

सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि समिति के कार्यकलापों की देखरेख एवं इसके कार्यों के विस्तार-विकास संवर्द्धन एवं उन्नयन के उद्देश्य प्राप्ति हेतु एक संरक्षक मंडल का गठन किया जाए जिसमें सभी वर्तमान संस्थापक तथा समिति के सभी पूर्व अध्यक्ष तथा बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष इसके पदेन सदस्य होंगे।

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति : स्थायी कोष : बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति का स्थायी कोष २२,५१,००/- रु. का है जो भिन्न बैंकों में फिक्स डिपोजिट में जमा है। शिक्षा समिति की प्रगति तालिका इस प्रकार है :-

वर्ष	छात्र	छात्रवृत्ति राशि	प्रत्यावर्तन	स्थायी कोष	प.आ.स.	आ.स.	पो. स.
१९९८-९९	३२	४९,१००/-	१९,००५/-	७,२०,६४७.००	०१	०९	०८
१९९९-००	३७	७५,९००/-	४०,८१६/-	९,९५,२१६.००	०८	४४	१६
२०००-०१	४०	९६,६००/-	३०,५७५/-	१२,३५,९१५.३०	०९	२३	०८
२००१-०२	२५	४८,५००/-	१०,५३५/-	१२,०५,९१५.३०	००	००	०६
२००२-०३	४१	१,६२,२००/-	१५,५००/-	२०,३६,७१६.००	०५	१४	१३
२००३-०४	४०	१,७७,८००/-	२८,४८०/-	२२,५१,५५२.००	०१	००	१४

पटना सिटी : बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री भेजा

१६ अगस्त २००४ : बिहार प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन की पटना सिटी इकाई ने बाढ़ पीड़ितों के लिए ५० क्विंटल अनाज और चूड़ा रोसड़ा ट्रक से भेजा, सांसद सुभाष यादव ने हरी झंडी दिखाकर इसको रवाना किया। उन्होंने कहा कि सूबे के विकास के लिए सरकार ने कई योजनाओं को तैयार कर मूर्त रूप देने का काम किया है। बाढ़ पीड़ितों के पुनर्वास के लिए भी योजनाएं तैयार की गई हैं। कार्यक्रम के संयोजक व प्रदेश राजद सचिव गोविन्द कानोड़िया ने कहा बाढ़ पीड़ितों के पुनर्वास के लिए संस्था की ओर से यथा सम्भव सहयोग दिया जाएगा। समारोह के पूर्व मंत्री गजेन्द्र प्रसाद सिंह ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर सह संयोजक ईश्वरचन्द्र अग्रवाल अशोक बूबना, शिव प्रसाद मोदी, संजय विश्वकर्मा, गब्बू सिंह, अवधेश जायसवाल, राकेश केसरी और उमाशंकर सिंह कौशल के अलावा कई लोग मौजूद थे।

हाथ में झंडा लिए हुए माननीय सांसद श्री सुभाष यादव जी बीच में शाखा सचिव श्री गोविन्द कानोड़िया जी एवं पूर्व काबीना मंत्री श्री गजेन्द्र प्रसाद सिंहजी।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

पालोजोरी शाखा

दिनांक ५.८.२००४ को झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन शाखा पालोजोरी की एक बैठक में शाखा के पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से किया गया -

अध्यक्ष- श्री गिरधारी लाल मोदी, उपाध्यक्ष- श्री निर्मल वर्थवाल, सचिव- श्री गोपाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष- श्री जयप्रकाश केडिया। कार्यकारिणी के सदस्य- सर्वश्री प्रदीप अग्रवाल, अनूप कुमार मिहारिया, विश्वनाथ मिहारिया, अनिल कुमार मिहारिया, भगवत प्रसाद अग्रवाल, अरूण कुमार टिबड़ेवाल, गोपीराम झाझरिया आदि।

दुमका शाखा

अध्यक्ष - श्री ओमप्रकाश चनानीवाला, मंत्री - श्री ओमप्रकाश भालोटिया, इनके अतिरिक्त सर्वश्री पवन कुमार पटवारी, नागरमल पटवारी, शंकरलाल भालोटिया, प्रह्लाद प्रसाद भालोटिया, विनय कुमार मोदी, मोहनलाल हिम्मतसिंहका, सीताराम जालान, राम गोपाल बजाज, कमल प्रसाद सोंथलिया, किशनलाल झुनझुनवाला, भगवान दास हिम्मतसिंहका, हनुमान प्रसाद अग्रवाल, श्यामलाल झुनझुनवाला, अशोक कुमार झुनझुनवाला, शंकरलाल बसाईवाला, शिवकुमार पटवारी, केशर देव मोहनका कार्यकारिणी समिति सदस्य चुने गये।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर : गरीबों की समस्याएं सुनी, आने-जाने का किराया भी दिया

१९ सितम्बर २००४। प्रान्तीय सम्मेलन के पदाधिकारियों द्वारा समाज के कमजोर वर्ग के लोगों की परेशानियां पूछ कर सहायता का आश्वासन दिया गया। वृद्ध व बीमार लोगों का रजिस्ट्रेशन कर उन्हें चिकित्सकीय परामर्श के लिए डाक्टरों के पास भेजा गया। सहायतार्थ कैम्प में दूर-दराज से आये गरीबों की सम्मेलन संस्था के पदाधिकारियों ने आने-जाने का किराया भी दिया। उनकी समस्याएं सुनीं एवं उन्हें यथासम्भव हल कराने का आश्वासन दिया।

पुन: ता. २६.९.९२००४ को चिकित्सा शिविर आयोजित

प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा निर्धन एवं असहाय व्यक्तियों की सहायता में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। ३२ पात्रों की चिकित्सा जांच वृहद शिविर का आयोजन किया गया। जांचोंपरान्त रोगियों को औषधियों सहित आवश्यकतानुसार पैथोलॉजिकल परीक्षण, सी.टी. स्कैनिंग, रक्त व अन्य प्रकार के जांचों की समुचित व्यवस्था उपलब्ध करायी गयी। इन समस्त चिकित्सा सम्बन्धी प्रक्रिया में डा. डी.पी. अग्रवाल, अवध दूबे, डा. बंसल, डा. सुनील सिंघल, डा. ए. प्रसाद, डा. बृज, डा. अनूप अवस्थी, ओ.पी. भट्ट, डा. राजू लम्बा, डा. सुभाष खेड़िया एवं डा. राजीव चित्रांशी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। चिकित्सकों को धन्यवाद देते हुए प्रदेश अध्यक्ष श्री सोम प्रकाश गोयनका ने कहा कि सम्मेलन मूक, बधिर बच्चों की सेवा के साथ ही शिक्षा प्रसार में लगा हुआ है। संस्था ने शहर के डाक्टरों का एक पैनेल बनाया है। इसके तहत गरीब और विकलांग लोगों का इलाज कराया जाएगा। कार्यक्रम में प्रदेश महामंत्री श्री गोपाल सूतवाला एवं ११ चिकित्सक दल के अतिरिक्त भारी संख्या में स्थानीय गणमान्य उपस्थित थे।

कानपुर शाखा के सत्र २००४-०६ की कार्यकारिणी का गठन

१२.९.२००४। सम्मेलन की कानपुर शाखा की सत्र २००४-२००६ की नई कार्यकारिणी एवम् पदाधिकारियों का चयन श्री गोपाल तुलस्यान की अध्यक्षता में निम्न प्रकार सर्वसम्मति से हुआ-

१. श्री सत्यनारायण सिंहानिया (अध्यक्ष), २. श्री सुशील कुमार तुलस्यान (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), ३. श्री सत्येन्द्र माहेश्वरी (कनिष्ठ उपाध्यक्ष), श्री अनिल कुमार परसरामपुरिया (महामंत्री), ७. श्री महेश कुमार भगत (कोषाध्यक्ष)।

कार्यकारिणी सदस्य - सर्वश्री श्रीगोपाल तुलस्यान, श्रीराम अग्रवाल, रमेश चन्द रूंगटा, विश्वनाथ पारीक, हरिकृष्ण चौधरी, बलदेव प्रसाद जाखोटिया, पंकज राय अग्रवाल, नरेन्द्र भगत, कमलेश गर्ग, बालकृष्ण शर्मा, सुनील केडिया, मनोज टिबड़ेवाल, अनूप सींगातिया, कीर्ति सराफ, बासुदेव सर्राफ, भजन लाल शर्मा, श्रीमती रेनू भोजनमरवाला, श्रीमती बिन्दा बुकानिया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए श्री सिंहानिया ने कहा कि इस सत्र में सदस्यता वृद्धि का विशेष प्रयास करेंगे एवं सदस्य परिवारों से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित कर उनके सुझावों को संकलित करेंगे व तदनुरूप गतिविधियों को विस्तार देंगे। उनके सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाएं एकत्रित कर एक पुस्तिका का रूप देंगे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवामंच

पटना (बिहार) : कृत्रिम पैर एवं कैलिपर शिविर सम्पन्न

मारवाड़ी युवा मंच, पटना शाखा द्वारा दिनांक १५ से १९ सितम्बर ०४ तक नि:शुल्क कृत्रिम पैर एवं कैलिपर प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में गरीब एवं असहाय अपंग व्यक्तियों को कृत्रिम पैर एवं कैलिपर प्रदान किया गया। लगभग १५४ व्यक्तियों ने इस शिविर का लाभ उठाया।

शिविर के समापन समारोह का उद्घाटन न्यायमूर्ति श्री आर. एस. गर्ग ने किया। मुख्य अतिथि श्री राजीव रंजन वर्मा तथा विशेष अतिथि मंच के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पुरुषोत्तम शर्मा थे। उक्त अवसर पर समाज के काफी लोगों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

मोतीपुर (बिहार) : राष्ट्रीय चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित

५ सितम्बर २००४। मोतीपुर मारवाड़ी युवा मंच के तत्वावधान में स्व. भूरसिंह शेखावत की स्मृति में राष्ट्रीय चित्रांकन प्रतियोगिता का उद्घाटन विधायक श्री शशि कुमार राय ने किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने चित्रांकन को एक महान कला बताया, जिससे छात्रों में भाईचारा तथा देश प्रेम की भावना जागती है। मुख्य अतिथि मंच के प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री अरूण पोद्दार ने बताया कि युवा मंच समय-समय पर समारोह के माध्यम से जनजागृति लाने का काम करता है। बिहार के मंच के प्रान्तीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल ने कहा कि चित्रकला बच्चों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करती है। कला से बच्चों में सामाजिक एकता की भावना भी पैदा होती है। प्रतिस्पर्धा से बच्चों का व्यक्तित्व निर्माण बेहतर ढंग से हो पाता है ऐसे में चित्रांकन प्रतियोगिता बड़ी सहायक होती

है। प्रो. आरती नाथ सिंह ने कहा कि बच्चों को उनकी अभिरूचि और इच्छा के अनुरूप कैरियर चुनने की आजादी देनी चाहिए। सम्मेलन के मोतीपुर शाखाध्यक्ष श्री परमेश्वरलाल गिंदोरिया ने मंच को ऐसे कार्यक्रम के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिता से बच्चों में मानसिक विकास की संभावना ज्यादा रहती है। प्रतियोगिता में स्थानीय विद्यालयों के अलावा कांटी एवं मेहसी प्रखण्ड के कई विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सफल छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री रमेश अग्रवाल ने की एवं मंच संचालन चौधरी संजय अग्रवाल ने किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए माननीय विधायक श्री शशि कुमार राय, साथ में खड़े हैं युवा मंच के प्रान्तीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल एवं बायें से बैठे हुए मारवाड़ी सम्मेलन मोतीपुर शाखा अध्यक्ष श्री प्रमेश्वर लालजी गिन्दौरिया मंच के शाखा अध्यक्ष रमेश अग्रवाल 'डब्बु'।

बेगुसराय (बिहार) : स्वास्थ्य व शिक्षा बांटता अनोखा मेला

उत्तर बिहार के बेगूसराय जिला अंतर्गत बखरी बाजार में सम्पूर्ण टीकाकरण के लक्ष्य को बीती शताब्दी के वर्ष ९३ से मारवाड़ी युवा मंच के उत्साही कार्यकर्ताओं द्वारा एक शिविर आयोजित किया जा रहा है। संगठित पोलियो उन्मूलन अभियान में यह शिविर काफी मददगार साबित हुआ। जिलाधिकारी विमल कीर्ति सिंह ने इसकी निरीक्षण पुस्तिका में लिखा है कि इस संस्था ने इस तरह का वातावरण बना दिया है कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं भी बच्चों के स्वास्थ्य के क्षेत्र में टीकाकरण के महत्व को समझ रही है। नियमित टीकाकरण के लिए बच्चों व महिलाओं का दल भी बनाया जाता है। बेगूसराय के वर्तमान जिलाधिकारी ने तो सरकारी स्तर पर जिले भर में संचालित टीकाकरण अभियान से साक्षरता कर्मियों को जोड़कर इस कैम्प की सफलता को एक आदर्श रूप में प्रतिस्थापित कर डाला है। साक्षरताकर्मियों के इस अभियान की शुरूआत भी बखरी से ही करवायी गयी है। युनिसेफ ने भी इस कार्य की सराहना की है।

मारवाड़ी युवा मंच, मोतीपुर शाखा द्वारा तारीख १ से ७ अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन किया गया।

जूनागढ़ : चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित

२९ अगस्त २००४। मारवाड़ी युवा मंच शाखा जूनागढ़ द्वारा स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता भारत के महान कलाकार स्वर्गीय भूर सिंह शेखावत की स्मृति में आयोजित की गई थी। समग्र देश में ४२५ शाखाओं ने इस प्रकार की प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में जूनियर ग्रुपों में चौथी से सातवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और सीनियर ग्रुप में आठवीं से दसवीं कक्षा के छात्रा और छात्र सम्मिलित हुए।

प्रतियोगिता का उद्घाटन जूनागढ़ थाना प्रभारी श्री अनिरुद्ध राउत ने अग्रसेन जी महाराज की तस्वीर पर माल्यार्पण करके किया। जूनागढ़ के भूतपूर्व एन.ए.सी. अध्यक्ष श्री माणिकचंद अग्रवाल भाजपा नेता श्री वेदप्रकाश गोयल, बीजेडी नेता श्री नरेश अग्रवाल, कालाहंडी जिला परिषद के सदस्य श्री त्रिलोचन सिंह व वरिष्ठ शिक्षाविद पीताम्बर बीसी अतिथिगण रूप में उपस्थित थे। युवा मंच के अध्यक्ष श्री मुकेश अग्रवाल व सचिव श्री श्यामसुन्दर शर्मा ने प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया। प्रतियोगिता का संचालन मंच के सक्रिय सदस्य पवन खेमका अध्यक्ष राजू अग्रवाल व सूरन अग्रवाल द्वारा किया गया।

कांटाबांजी (उड़ीसा) : कार्यशाला का आयोजन सम्पन्न

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा विगत दिनों कटक शाखा के आतिथ्य में कार्यशाला का आयोजन किया गया। शाखा मंत्री श्री मनोज नागलिया ने अतिथियों का पुष्प गुच्छे से स्वागत किया। प्रान्तीय संयोजक श्री राजेश अग्रवाल ने कार्यक्रम का संचालन किया। मंच में महिलाओं की भागीदारी एवं सक्रियता विषय पर मंडलीय उपाध्यक्षा व कटक शाखाध्यक्षा श्रीमती सम्पति मोढ़ा ने अपने विचार रखे। उड़ीसा में मंच आन्दोलन एवं मंच स्थापना के २० वर्ष पूर्ण होने की प्रान्तीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, बरगड़ ने जानकारी दी।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल, कांटाबांजी ने सदस्यता व शाखा विस्तार किस प्रकार हो तथा २० जनवरी मंच

स्थापना दिवस पर कौन-कौन से कार्यक्रम आयोजित हों, पर चर्चा की एवं प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित कर पुरस्कार वितरण किया। राष्ट्रीय महामंत्री श्री पुरुषोत्तम शर्मा, चाईबासा ने संगठन परिचर्चा की। कार्यशाला के विशेषज्ञ श्री चन्देश्वर खां, जमशेदपुर ने कार्यक्षमता एवं कार्यगुणवत्ता तथा परस्पर सहयोग से सफलता किस प्रकार प्राप्त हो विषय पर अपने विचार प्रकट किए।

अमृत धारा के राष्ट्रीय संयोजक श्री अशोक शर्मा, कटक, ने राष्ट्रीय कार्यक्रम व युवा विकास के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुशील संतुका, कटक ने आर्ट आफ कम्युनिकेशन एवं प्रांतीय संयोजक श्री ओम प्रकाश मिश्रा, भुवनेश्वर ने जेट्रोफा प्लान्टेशन व बायोडिजल प्रोजेक्ट विषय कर कार्यशाला ली।

इस अवसर पर कटक शाखाध्यक्षाश्रीमती सम्पती मोढ़ा द्वारा लिखित पुस्तक 'भावों की लहरें' का विमोचन किया गया, शाखा द्वारा चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित की गई एवं सक्रिय सदस्यों को पुरस्कृत किया गया।

प्रान्तीय महामंत्री श्री जयप्रकाश लाठ बग्गड़ एवं कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री दिलीप वैध ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यशालामें विभिन्न अंचल से आये प्रान्तीय व शाखा पदाधिकारी भारी संख्या में उपस्थित थे।

नौगांव (असम) : नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित

८ अगस्त २००४। युवा मंच की नौगांव शाखा द्वारा गौहाटी के स्व. अजय मित्तल की स्मृति में कामपुर क्षेत्र के देवनारीकोली के बाढ़ प्रभावित ग्रामीणों के लिए नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में एक हजार ग्रामीणों को नि:शुल्क चिकित्सा की गई। असम के पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रफुल्ल कुमार महन्त ने शिविर का भ्रमण किया। मानवता की सेवा के लिए मंच की सराहना की। शिविर में गुवाहाटी के मारवाड़ी मेटरनिटी अस्पताल द्वारा डाक्टर, नर्स, स्टाफ के साथ-साथ बड़े परिमाण में दवाइयों की व्यवस्था की गई एवं लेखचन्द्र नाहटा मेमोरियल ट्रस्ट नौगांव द्वारा शिविर को वृहद रूप में परिचालन हेतु आर्थिक मदद प्रदान की गई। शाखाध्यक्ष श्री सुनील सरावगी ने शिविर का संचालन किया।

नगांव (असम) : बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत अभियान

असम में आई विनाशकारी बाढ़ ने नगांव जिले एवं मेरीगांव जिले को बहुत प्रभावित किया। स्थानीय समाज के सहयोग से युवा मंच नगांव शाखा ने २१ जुलाई से ३१ जुलाई तक लगातार बाढ़ पीड़ितों की सेवा की। सदस्यों ने देवधर चारआली डाकलघाट, कपिलीमुख, दक्षिणपाट, बेबेजिया, फुलोगुड़ी, रोहा, खालीगांव, बारहपुजिया, मोरिगांव, भुरागांव, ठेकरागुड़ी, आहतगुड़ी, नेली तेतलीसरा, कामपुर, जाजोरी सहित विभिन्न स्थानों पर जाकर बाढ़ पीड़ितों के बीच खाद्य-सामग्री, कपड़े, बिस्कुट, ब्रेड, चिड़वा, बच्चों का दूध, मच्छरदानी वितरीत किया, साथ ही कई जगहों पर पानी का टैंकर ले जाकर पेयजल भी उपलब्ध कराया।

बैठे हुए बीच में असम के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रफुल्ल कुमार महन्त के साथ शाखा अध्यक्ष श्री सुनील कुमार सरावगी

इस कार्य में शाखा के सुनील सरावगी, अरूण नागरका, पंकज गाड़ोदिया, पवन किल्ला, गिरीश आलमपुरीया, पवन अग्रवाल, संजय पौद्दार, मनोज खेतावत, सुनील ढाढरिया, ललित शर्मा, मिट्ठू मोर सहित कई सदस्यों ने सहयोग दिया।

पटना (बिहार) : मुख्यमंत्री को बाढ़ राहत सहायता सामग्री सौंपी गयी

२ अगस्त। मारवाड़ी युवा मंच पटना शाखा के अध्यक्ष/मंत्री एवं कोषाध्यक्ष द्वारा मुख्यमंत्री श्रीमती राबड़ी देवी से मुलाकात कर उत्तर बिहार के बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ ६ सौ किलो ग्राम चुड़ा, २०० किलो ग्राम सत्तू, ७० किलो ग्राम गुड़, ७००० पीस पावरोटी, ४००० पीस ओआरएस पाकेट एवं १०० तिरपाल शीट के साथ नमक, मोमबत्ती, माचीस का एक-एक कार्टून भेंट किया। मुख्यमंत्री ने सहायता सामग्री को धन्यवाद सहित स्वीकार करते हुए इस पुनीत सहायता कार्य के लिए बधाई दी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर युवकों के योगदान की प्रशंसा की और कहा कि युवा शक्ति ही देश के कर्णधार हैं। युवा अपनी शक्ति को पहचाने और इसका उपयोग राष्ट्र निर्माण, समाज निर्माण एवं समाज सेवा में लगावे। युवा शक्ति के सजग एवं संवेदनशील होने से देश का कल्याण होगा, सबको न्याय मिलेगा।

इस अवसर पर रेल मंत्री श्री लालू प्रसाद यादव एवं सूचना राज्य मंत्री श्री श्याम रजक एवं पूर्व विधान पार्षद अनवर अहमद भी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

जूनागढ़ : साड़ी पहनने व मेहन्दी लगाने के नये तरीके का प्रशिक्षण आयोजित

अगस्त महीने में शाखा ने युवा मंच जूनागढ़ शाखा के साथ दो दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन किया जिसमें रायपुर की सुप्रसिद्ध प्रशिक्षिका श्रीमती प्रज्ञा राठी ने जूनागढ़ की ४० महिलाओं व युवतियों को साड़ी पहनने के २८ नये तरीके एवं मेहन्दी लगाने के अनूठे तरीकों के विषय में प्रशिक्षण दिया।

स्वाधीनता दिवस आयोजित

१५ अगस्त को महिला समिति की जूनागढ़ शाखा ने स्वाधीनता दिवस के अवसर पर लेप्रा इण्डिया (विकलांग सहायता संस्था) में झंडा फहराया एवं संगठन की एकता को बढ़ाया।

तीज पर्व आयोजित एवं बच्चों को नि:शुल्क पुस्तक विवरण

शाखा द्वारा तीज पर्व के अवसर पर तीज समारोह का आयोजन किया गया जिसमें झूला व स्टाल के साथ मेहन्दी प्रतियोगिता के कार्यक्रम हुए। जूनागढ़ के एक मात्र महिला महाविद्यालय के संचालन में समिति का योगदान रहा है। समय-समय पर समिति ने फल वस्त्र इत्यादि एवं बच्चों में नि:शुल्क पुस्तकें भी बांटी है।

शाखा की एक बैठक में अध्यक्षा ने पुष्टि की कि यह संगठन महिलाओं के विकास व समाज के विकास में तत्पर संगठनों से मिलकर राष्ट्र शक्ति के स्वरूप को साकार करेगा। अग्रसेन जयन्ती मनाने एवं समग्र जूनागढ़ में महिला समिति के प्रचार व संगठन को और मजबूत बनाने के प्रयास को मुख्य बताया।

अन्य संस्थाएं

तमिलनाडु : द्वितीय राजस्थानी राज्य परिषद सम्मेलन

२९ अगस्त। चैन्नई में आयोजित द्वितीय राजस्थानी राज्य परिषद सम्मेलन का उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान रत्न एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालकृष्ण गोयनका ने मंचासीन राजस्थानी एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री कैलाशमल दुगड़, मंत्री श्री गौतम चन्द बोहरा, राज्य परिषद के संयोजक श्री कांतिलाल संघवी, सहसंयोजक श्री विजय बाफना एवं नवनिर्वाचित अध्यक्ष इन्दरचन्द कोठारी की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित किया। मुख्य अतिथि श्री गोयनका का शाल एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान कर स्वागत किया गया। माननीय अध्यक्ष ने स्वागत भाषण में स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों व तमिलनाडु के विभिन्न शहरों से पधारे राजस्थानी समाज के राजनीतिज्ञों एवं संस्था प्रतिनिधियों का स्वागत किया। संयोजक श्री संघवी ने राज्य परिषद सम्मेलन के उद्देश्य एवं गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए दक्षिण राजस्थानी पोस्ट, राजस्थान रत्न, राजस्थान श्री अवार्ड, राजस्थान भवन की परिकल्पना एवं तमिलनाडु में राजस्थानी संस्थाओं की दिग्दर्शिका पर चर्चा की।

अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष तथा आयोजन के मुख्य अतिथि श्री बालकृष्ण गोयनका दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए।

चर्चा हेतु रखे गए तीन महत्वपूर्ण विषयों में पहला विषय तमिलनाडु में राजस्थानी समुदाय की राजनीति में सक्रियता पर श्री विजय बाफना ने अपने विचार रखें। कई राजनीतिज्ञों ने अपनी पार्टी से ऊपर उठकर तमिलनाडु में राजस्थानी समुदाय को राजनीति में सक्रिय भागीदारी पर बल देने की बात कही एवं सभागार में इस विषय के समर्थन में आम सहमति बनी। इस सत्र में मदुरान्तकम, चेन्नई आवडी, चिंगलपेट, चेगम, वंदवासी, आरकोनम आदि कई स्थानों से राजनीतिज्ञ उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र में 'राजस्थानी समाज में महिला सशक्तिकरण' पर श्रीमती शशि लोढ़ा, नयन झाबक एवं प्रभा गोठी ने महिलाओं को समयानुकूल हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर एवं पुरुष सदस्यों से उन्हें स्वतंत्रता देने पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्रीमती कमला बैद एवं श्रीमती इन्द्र नाहर ने संस्कार पर बल देते हुए कहा कि नारी स्वतंत्र बनकर आगे बढ़े, स्वच्छन्द नहीं। नारी आदर्श, करुणा,

वात्सल्य, स्नेह एवं श्रद्धा की प्रतिछाया है। वे इस बात को ध्यान में रखे कि वह विलासित जीवन से बचे एवं अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े।

'समझौता मंच' का उद्घाटन आज के समारोह की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। इसकी उपयोगिता पर श्री दुगड़ ने विवेचन किया कि इससे समाज की शक्ति, समय व धन का अपव्यय रोका जाएगा एवं समाज के सदस्यों की जटिल न्यायिक प्रतिक्रियाओं को सामाजिक मंच पर ही इस समिति द्वारा निपटाया जाएगा। समझौता मंच का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त न्यायिक श्री पी.आर. सुराणा के कर-कमलों से हुआ। इसके अन्तर्गत गठित सदस्यों का परिचय करवाया गया।

द्वितीय राज्य परिषद सम्मेलन द्वारा किए गए उद्घोष 'एक साथ प्रगति की बात' के उपरान्त सहमंत्री श्री मालपानी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। सह संस्था संस्कृति द्वारा अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

कोलकाता : वृहत्तर कलकत्ता प्रादेशिक माहेश्वरी सभा द्वारा प्रतिभा सम्मान का आयोजन

४.९.२००४ को प्रदेश के विभिन्न अंचलों में निवास करने वाले स्वजातीय परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों एवं विशिष्ट प्रतिभाओं को 'प्रतिभा सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री विष्णुकांत शास्त्री (पूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश) ने किया और कहा कि इस तरह के सम्मान से सुप्त प्रतिभाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। अतिथि प्रो. कल्याणमल लोढ़ा (भूतपूर्व उपकुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय) ने कहा कि 'प्रतिभा-सम्मान' से नई प्रतिभाओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होती है। श्री विश्वम्भर नेवर ने कहा कि सम्मानित लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि उनके विकास में समाज की भी अहम् भूमिका है। श्री सुधांशु शील (सांसद) ने कहा कि हम राजनेताओं को भी इन प्रतिभाओं से सीख लेनी चाहिए। श्री दिनेशचन्द्र वाजपेयी (पूर्व महानिदेशक, प. बं. पुलिस) ने प्रतिस्पर्धा के इस युग में इस तरह के कार्यक्रम सार्थक होते हैं बताया। श्री अशोक द्वारकानी (सहमंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महासभा) ने महासभा की ओर से शुभकामना प्रेषित की। समारोह अध्यक्ष श्री रघुनाथदास सोमानी (पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा) ने कहा कि सफल व्यक्तियों को अपने समाज के प्रति भी कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। **आरम्भ में प्रदेशाध्यक्ष श्री जगदीशचंद्र एन. मुंदड़ा ने आगत लोगों का स्वागत किया।** गोवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए श्री श्रीगोपाल कर्वा का अभिनंदन किया गया। प्रायोजक ट्रस्ट लक्ष्मीदेवी नृसिंहदास मुंदड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट की न्यासी श्रीमती सुधा मुंदड़ा ने प्रो. लोढ़ा को 'सूरदास न्यास' हेतु ११०००/- की सहयोग राशि का चेक भेंट किया। कुल ६० प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। युवा संगठन के प्रदेशाध्यक्ष डा. बलदेवदास बाहेती ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर 'ज्ञान गंगा' २००४ के ४ श्रेष्ठ प्रतियोगियों को भी सम्मानित किया गया। सर्वश्री रमाशंकर झंवर, नेमीचंद तोषनीवाल, जगमोहनदास पलोड़, जुगलकिशोर जैथलिया एवं श्रीमती शोभा सादानी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय थी। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री सत्यनारायण कोठारी, कौशल मोहता, अंजनि सोमानी, प्रमोद काबरा, श्रीकिशन राठी, प्रकाश काबरा, कलदीप गट्टानी, राजेश चांडक, पवन चांडक एवं विजय सोमानी का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री देवकिशन करनानी ने किया।

माहेश्वरी युवा संगठन हैदराबाद की राष्ट्रीय बैठक आयोजित

११, १२ सितम्बर २००४, आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आतिथ्य में हैदराबाद में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन की कार्यसमिति की षष्टम बैठक एवं कार्यकारिणी मण्डल की तृतीय बैठक आयोजित की गई। माहेश्वरी महासभा के सभापति श्री चुन्नलाल सोमाणी ने बैठक का उद्घाटन किया। स्वागताध्यक्ष श्री रमेशकुमार बंग ने उपस्थित युवाओं को सम्बोधित

करते हुए कहा कि युवाओं को सामाजिक समस्याओं के व्यावहारिक उपाय ढूंढने होंगे और ये उपाय युवाओं की सामाजिक चिंतनशीलता, दूरदृष्टि और रचनात्मक दृष्टिकोण के विकास से सहज ही खोजे जा सकते हैं। हमारे समाज की यह विशेषता रही है कि हम तुरन्त ही स्वयं को किसी भी वातावरण और परिस्थिति में ढाल लेते हैं। कभी-कभी यह प्रक्रिया भीषण समस्याओं जैसे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, अपव्यय, आडम्बर और अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देती है जो कि हमारे सामाजिक मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों के सर्वथा विपरीत है। हमें समझना होगा कि जो बातें हमारी रीति और नीति में नहीं फिर उनका बोझ हम क्यों ढोयें। हमें चिन्तन और मनन करना होगा कि हम क्या करें और क्या न करें, जिससे कि हम देश के प्रगतिशील समाजों में अग्रणी रह सकें।

युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल मानधनी ने कहा कि संगठन सपरिवार रूपी जल की भांति होता है, जिसमें तेल की भांति नहीं वरन् दूध की भांति हिलमिल कर रहना चाहिए। विशेष अतिथि श्री नारायणलाल कलंत्री, श्री नथमल डालिया मुख्य अतिथि और महासभा के महामंत्री श्यामसुन्दर सोनी, समारोह अध्यक्ष श्री बद्रीनारायण राठी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

महिला संगठन की सदस्याओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। युवा संगठन द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। प्रादेशिक अध्यक्ष रामप्रकाश भण्डारी ने संगठन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और मंत्री दिनेश डालिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया। निस्वार्थ समाज सेवी कुशल सामाजिक संगठनकर्ता, आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष, स्वर्गीय आशाराम मालाणी की स्मृति में बैठक स्थल का नाम श्री आशाराम मालाणी सभागृह रखा गया। आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री रामेश्वरलाल हेडा के नाम पर आयोजन स्थल को रामेश्वरलाल हेडा नगर नाम दिया गया। बाहर से पधारे प्रतिनिधियों के आवास स्थल को लूणकरण बाहेती अतिथि गृह का नाम दिया गया।

राष्ट्रीय ज्ञान गंगा प्रतियोगिता

११ सितम्बर २००४। आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आतिथ्य में हैदराबाद में स्व. रामगोपाल भट्टड़ स्मृति राष्ट्रीय ज्ञान गंगा प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें लगभग ६० प्रतियोगियों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि श्री ओ.पी. जागेटिया ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं एक ओर जहां बालकों के ज्ञान में अभिवृद्धि करती है वहीं दूसरी ओर सामाजिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता लाने में सहायक होती है। इस अवसर पर युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिलजी मानधनी विशेष अतिथि श्री रतनलाल राठी एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी काबरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष एवं आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री रमेश कुमार बंग, ज्ञान गंगा प्रतियोगिता के संयोजक श्री सुशील कुमार कालाणी, संगठन के राष्ट्रीय मंत्री अशोक इन्नाणी, अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं सदस्यगण, आयोजक संगठन के अध्यक्ष रामप्रकाश भण्डारी, मंत्री दनेश डालिया, प्रतियोगी छात्र-छात्राएं, अभिभावक गणों सहित बड़ी संख्या में नगरद्वय के प्रतिष्ठित जन उपस्थित थे। सांसद श्री प्रदीप गांधी और मुख्य अतिथि श्री रामपाल सोनी का परिचय दिया गया। युवा संगठन द्वारा सभी अतिथियों और राष्ट्रीय पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक इन्नाणी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रतियोगियों और विजेताओं को स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र और पदक प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन विकास कुमार चितलांगिया ने किया।

माहेश्वरी क्लब नई दिल्ली द्वारा ''मीरा रंग हरि संग''

माहेश्वरी क्लब का वर्षा मंगल का प्रोग्राम कमानी सभागार में १२ तारीख को सायं ६.३० बजे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा प्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी एवं श्रीसिमेन्ट लिमिटेड के चेयरमैन, श्री हरिमोहन जी बांगड़ थे। उन्होंने अपने भाषण में टी.वी. तथा फिल्मी कार्यक्रम से दूर मीरा के ५वीं जन्म शताब्दी पर मीरा रंग हरि संग को काफी सराहा। उन्होंने यूवा उद्योगपतियों को भारत में हो रहे उदारीकरण का लाभ उठाने को कहा।

चित्तौड़ (राजस्थान) की प्रसिद्ध कवियित्री व श्रीकृष्ण की परम भक्तिनी मीराबाई के जीवन-वृतान्त को उजागर करने का प्रयास एक नृत्य-नाटिका में किया गया है।

क्लब के सभापति अनिल जाजू ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि क्लब के परिवार ने मिलकर इतना सुन्दर कार्यक्रम बनाया है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि क्लब ने एक हेल्प लाइन की शुरूआत की है जो क्लब के किसी भी साथी को खुशी या गम में सहयोग देने को तैयार रहेंगे। क्लब आने वाले समय में मुख्य कार्यक्रम रक्तदान शिविर, नि:शुल्क हृदय रोग जांच शिविर, नि:शुल्क एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण शिविर लगाएगा। क्लब के मंत्री श्री प्रभाकर काबरा ने बताया कि पिछले वर्ष हमने १००० यूनिट से भी ज्यादा ब्लड डोनेशन दिया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती मूंधड़ा तथा सांस्कृतिक उपमंत्री श्रीमती सरिता डागा का विशेष सहयोग रहा। श्री विजय मारु, सम्पादक द्वारा स्मारिका का विमोचन श्री राजेन्द्र प्रसाद जी खेतान, चेयरमैन, सलोरा इन्टरनेशनल से करवाया। इस कार्यक्रम का निर्देशन दिल्ली के प्रसिद्ध निर्देशक श्री हमेन्ता कुमार कलिता ने किया।

अग्रवाल समाज, चेन्नई : पदाधिकारियों की घोषणा

२५ सितम्बर २००४। श्री अग्रवाल समाज, चेन्नई की एक आमसभा में वर्ष २००४-०५ के लिए निम्न निर्वाचित पदाधिकारियों

की घोषणा की गई।

सर्वश्री सुरेश कुमार गुप्ता- अध्यक्ष, हरिशंकर अग्रवाल, मनमोहन अग्रवाल- उपाध्यक्ष, पुरुषोत्तम सर्राफ - महासचिव, नरेन्द्र कुमार सिंगला - सचिव, सुरेन्द कुमार केडिया- कोषाध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री सन्तोष लाठ, सांवरमल खेमका, योगेश बंसल, श्रवण कुमार तोदी, शंकरलाल सोंथलिया, गोबर्धन अग्रवाल, हरीश कुमार सांघी, सीताराम गोयल, चन्द्र प्रकाश लोहिया एवं बसेसर गोकुलका।

कोलकाता : श्री रामकृष्ण जनकल्याण समिति के चतुर्थ वर्ष के सेवा कार्यों का विवरण

श्री रामकृष्ण जनकल्याण समिति द्वारा इस वर्ष २३०० रोगियों का नेत्र परीक्षण किया गया एवम् २१२५ चश्में जरूरतमंदों को नि:शुल्क प्रदान किये गये। होमियोपैथिक विभाग द्वारा करीब ३०५० रोगियों को दवाइयां प्रदान की गई।

कार्यकर्ताओं द्वारा खजुरदाहा आदिवासी ग्रामीण अंचल में दो कैम्प नेत्र परीक्षण एवम् होमियोपैथिक दवाइयां वितरण हेतु लगाए गए जिसमें ४५० रोगियों का इलाज हुआ। इन कैम्पों एवं कलकत्ता सेवा विभाग के १६० रोगियों का मोतियाबिन्द का आपरेशन कलकत्ता में हुआ।

ग्रामीण अंचलों में रोगियों की सहायता हेतु समिति के अध्यक्ष चिरंजीलाल अग्रवाल द्वारा एक एम्बुलेंस प्रदान किया गया।

श्रीरामपुर एवं खजूरदाहा के छात्रावास और अनाथालय में रहनेवाली २५० छात्राओं को वस्त्र एवं पुस्तकें प्रदान की गई। अनाथालय में रहने वाली अनेक महिलाओं का साड़ियां एवं वृद्धाश्रम के लिए २० पंखे प्रदान किये गये।

अग्रवाल निदेशिका समिति, नई दिल्ली का उन्तालीसवां परिचय-सम्मेलन सम्पन्न

२० सितम्बर २००४ को अग्रवाल निदेशिका समिति द्वारा नई दिल्ली में अग्रवाल युवक-युवतियों का उन्तालीसवां परिचय-सम्मेलन आयोजित किया गया।

परिचय सम्मेलन के मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री चरतीलाल गोयल ने दीप प्रज्वलित कर परिचय सम्मेलन का शुभारम्भ किया।

मंच का संचालन समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री रामचन्द्र गुप्ता एवं उपाध्यक्ष श्री सुरेश कुमार अग्रवाल ने किया।

परिचय-सम्मेलन के लिए २८० प्रत्याशियों का पंजीकरण हुआ। १५४ युवकों में १३ विधुर, परित्यक्त तथा विकलांग थे। १२६ युवतियों में १४ विधवा तथा परित्यक्ता थीं। मंच पर ५० युवकों तथा २४ युवतियों ने अपना-अपना परिचय दिया। सम्मेलन में अभिभावकों के अतिरिक्त दर्शक भी पर्याप्त मात्रा में उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रत्याशियों की एक परिचय-पुस्तिका भी प्रकाशित की गई।

तेरापंथ महिला मण्डल, सिलोंग

तेरापंथ महिला मण्डल, शिलांग के तत्वावधान में नि:शुल्क दन्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। गुजरात से पधारे डाक्टर हितेश शशिकान्त भाई व्यास तथा उनके दो सहयोगियों द्वारा लगभग ६०० दन्त रोगियों की दन्त चिकित्सा दो दिनों में की गई।

नई दिल्ली : एम.सी. भंडारी मेमोरियल अवार्ड प्रदत्त

१९.९.२००४ को 'भारत निर्माण' द्वारा आयोजित एक सेमीनार में ६ठी एम.सी. भंडारी मेमोरियल अवार्ड २००४ से श्री राम निवास लाखोटिया को सम्मानित किया गया। श्री लाखोटिया ने इस अवसर पर फैशन की दुनिया में 'शाकाहार' की महत्ता पर अपने विचार प्रकट किए। श्री रवीन्द्र भंडारी की कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका रही।

सम्मान/बधाइयां

राजस्थान के सुविख्यात साहित्यकार 'ताऊ शेखावटी' पुरस्कृत

राम निवास आशारानी लाखोटिया ट्रस्ट द्वारा अपनी ता. ५.९.२००४ की बैठक में सवाई माधोपुर के 'नामी साहित्यकार ताऊ शेखावटी' को रु. ३१००० के ११वें लाखोटिया पुरस्कार के लिए चयन किया गया, जो दिल्ली में ता: २५.९.२००४ को अनुष्ठित १४वें राजस्थानी नृत्य महोत्सव के अवसर पर उन्हें प्रदान किया गया। सम्मेलन द्वारा ताऊ शेखावटी को हार्दिक बधाई।

जोधपुर : गहलोत लीगल अवेयरनेस कमेटी की सदस्य बनीं

सामाजिक कार्यकर्ता व साहित्यकार प्रोफेसर डा. तारा लक्ष्मण गहलोत को राजस्थान राज्य विधिक प्राधिकरण द्वारा 'उच्च न्यायालय विधिक चेतना समिति' की सदस्य बनाई गई है। जोधपुर विश्वविद्यालय की सेवा-निवृत्त प्रोफेसर डा. तारा लक्ष्मण वर्तमान में बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष हैं। डॉ. गहलोत महिला कल्याण बाल कल्याण, नशा निषेध, पर्यावरण सुरक्षा, विकलांग कल्याण व पुनर्वास तथा साक्षरता आदि के क्षेत्रों में सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पिछले पचास वर्षों से अपनी सेवाएं दे रही हैं।

राउरकेला

राउरकेला निवासी ४१ वर्षीय श्री नित्यानंद सिंघल राउरकेला पौर निगम के वार्ड नं. १९ के पार्षद चुने गए हैं। स्नातक एवं व्यवसाय से युक्त श्री सिंघल युवा एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं तथा समाज के साथ-साथ अपने क्षेत्र में अच्छी पहचान रखते हैं। श्री सिंघल स्वर्गीय चतुर्भुज सिंघल के सुपुत्र हैं। वे राउरकेला के बहुत सी संस्थाओं (धार्मिक और सामाजिक) से सक्रिय रूप से जुड़े हैं यथा हरियाणा नागरिक संघ, वेदव्यास गौशाला आदि।,

श्री शैलेन्द्र मारोठिया

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया के पुत्र श्री शैलेन्द्र मारोठिया वर्तमान में राउरकेला नगरपालिका के पार्षद है एवं दुर्गापूजा सेन्ट्रल कमिटि के सदस्य होने के साथ-साथ कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए है। सम्मेलन परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई एवं जीवन में और विशिष्ट सफलताओं को प्राप्त करने की शुभकामनाएं।

मुजफ्फरपुर - राष्ट्रीय महासचिव व प्रान्तीय सचिव मनोनीत

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की मुजफ्फरपुर जिला समिति की एक बैठक अध्यक्ष श्री सत्यनारायण तुलस्यान की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सम्मेलन के वंशानुगत सदस्य श्री परमेश्वर लाल केजड़ीवाल को लालू विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव, सम्मेलन के आजीवन सदस्य सह जिला समिति के मंत्री श्री राजीव कुमार केजड़ीवाल को लालू विचार मंच का प्रान्तीय सचिव मनोनीत किया गया। इनके मनोनयन पर सर्वश्री सत्यनारायण तुलस्यान, विनोदकुमार अग्रवाल, विजय लोहिया, पवन कुमार बागोरिया, श्याम सुन्दर भरतिया, पुरुषोत्तम दहलान, महावीर प्रसाद अग्रवाल, किशोरी लाल अग्रवाल, डा. उर्मिला बंका, राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, मनोहर लाल केजड़ीवाल आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की।

पटना : जान की परवाह न कर सच्चाई से अवगत कराया

समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति प्रोफेसर (डा.) श्याम सुन्दर तुलस्यान को राज्यपाल ने मगध विश्व विद्यालय का 'प्रति कुलपति' नियुक्त कर, कुछ समय बाद ही विश्वविद्यालय के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश करने की आज्ञा दी। प्रो. तुलस्यान ने राज्यपाल को विस्तृत रिपोर्ट सौंपी कि मगध विश्वविद्यालय में ४६ सरकारी एवं ८५ निजी महाविद्यालय चल रहे हैं। ८५ में से ३३ को ही मान्यता प्राप्त है बाकी ५२ महाविद्यालय फर्जी हैं जो बाहुबलियों द्वारा संचालित है जिनमें अधिकारियों की मिली भगत से छात्रों का नामांकन भी होता है और परीक्षायें भी दिलवाई जाती है जो बिल्कुल नाजायज है। इस प्रकार की रिपोर्ट मिलने पर राज्यपाल ने पटना उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश को न्यायिक जांच सौंपी है। फिलहाल प्रो. श्याम सुन्दर तुलस्यान को जान से मारने की धमकियां भी मिल रही हैं, जबकि सरकार की ओर से उन्हें कोई सुरक्षा प्रदान नहीं की गई है अब तक। सम्मेलन की ओर से उनके साहसिक कार्य के लिए उन्हें बधाई।

पटना : राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी (चक्षु) नियुक्त

पटना के सुप्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. नरेश कुमार भीमसरिया को बिहार सरकार ने राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी 'चक्षु' के पद पर नियुक्त किया है। डा. नरेश भीमसरिया बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया के सुपुत्र हैं।

श्रद्धांजलि

जूनागढ़ : जूनागढ़ के पुर्वत्तन नगरपाल तथा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सह-सम्पादक लायन माणिकचंद अग्रवाल की दादी श्रीमती इलायची देवी का स्वर्गवास १६ अगस्त २००४ को ९० वर्ष की अवस्था में हो गया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं उनके शोक संतप्त परिवार को इसी स्थिति को सहने की शक्ति प्रदान करें।

जोरहाट : सड़क दुर्घटना

गुवाहाटी में एक सड़क दुर्घटना में युवा कार्यकर्त्ता अजय मित्तल की असामयिक मृत्यु पर जोरहाट शाखा द्वारा सम्वेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की चिर शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गर्स, साथ ही इसी सड़क दुर्घटना में घायल सर्वश्री दिलीप अग्रवाल, अमित बजाज, विकास बजाज एवं नीरज खेमका के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना भी की गयी।

मोतीपुर

२ अगस्त २००४ । बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच के सहायक मंत्री श्री चौधरी संजय अग्रवाल (मोतीपुर) की बड़ी महन के असामयिक निधन पर युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया एवं राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री रवि अग्रवाल ने प्रेषित शोक संदेश में दिवंगत आत्मा की चिर-शांति की परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की।

कोलकाता : सम्मेलन के साधारण विशिष्ट सदस्य श्री केदारमल झंवर की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी का देहावसान ११ अक्टूबर को हो गया। वह अत्यंत सात्विक एवं धार्मिक विचारों वाली स्नेहमयी सहृदया पुण्यात्मा थीं व अपने परिजनों के लिए पथ प्रदर्शक एवं प्रेरणास्रोत भी जिनके कार्य हमेशा उनकी याद दिलाते रहेंगे। सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने श्री झंवर को पत्र देकर शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति व शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

S.R. RUNGTA GROUP

Insync with Nature...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE** – BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE** – BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON** – LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

CENTRAL MINES OFFICE

BARAJAMDA – 833221, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06596- 262221/262321; Fax: 91-6596-262101;GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

BARBIL – 758035, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 276891; Telefax: 91-6767-276891

Dhanwantary
Chemist Shoppe
Kolkata's NO.1
retail chain of medicine shop

KHIDIRPORE : 65, D.H. Road, Near Calcutta Hospital, Kolkata- 700 023, Tel. : 2449-3734

ALIPORE : 1, N.L. Avenue, Near B.M. Birla Hospital, Kolkata- 700 027, Tel. : 2479-1219

HAZRA : 47, .S.P. Mukherjee Road, Hazra Jn. Kolkata- 700 026, Tel. : 2474-3649

GOLPARK : 22/1, Gariahat Road, Golpark Jn. Kolkata- 700 029, Tel : 2440-3675

NEOTIA HOSPITAL : 2, Rawdon Street, Kolkata- 700 017, Tel. : 2281-7833

NEAR P.G. HOSPITAL : 80A/B,.S.N. Pandit Street, Kolkata- 700 020, Tel. : 2454-7941

धनवंतरि- आपका विश्वास, हमारी धरोहर

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,